नवम्बर 2024

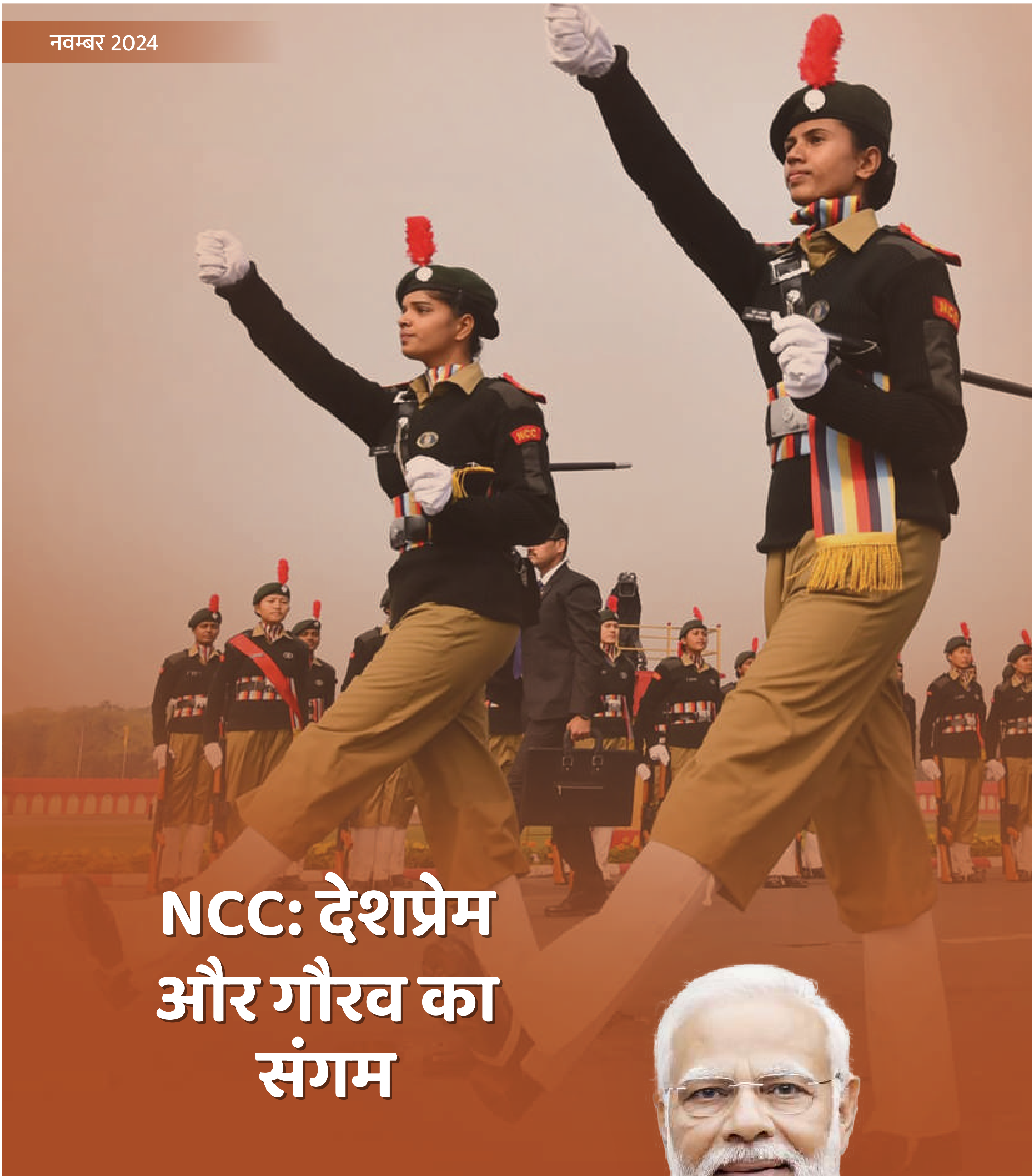

NCC: देशप्रेम और गौरव का संगम

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **नेशनल कैडेट कोर :** युवाओं के लिए राष्ट्र सेवा का आदर्श 16

2.2 **युवा-नेतृत्व में नवाचार और डिजिटल समावेशन :** समुदायों का सशक्तीकरण 30

2.3 **भारत में मौखिक इतिहास परियोजनाएँ :** स्मृतियों, ध्वनियों और पहचानों का संरक्षण 48

2.4 **लुप्त होती गौरैया और शहरीकरण** 52

03 संक्षेप में

3.1 **प्रगति के पथप्रदर्शक युवा** 20

3.2 **स्वामी विवेकानन्द की जयंती** 28

3.3 **पढ़ने की अलख जगाते :** पुस्तकालय 42

3.4 **गौरैया से लौटती प्रकृति की मुस्कान** 56

3.5 **मिट्टी से मोहब्बत! :** प्रकृति को संवारने वाले नायक 58

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 राष्ट्रीय कैडेट कोर : विकसित भारत के लिए युवा शक्ति लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह 22

4.2 विकसित भारत यंग-लीडर्स डायलॉग : भारत के युवाओं के लिए कार्रवाई का आह्वान - डॉ. मनसुख मंडाविया 26

4.3 परम्परा से प्रौद्योगिकी तक : युवा नेतृत्व और भारत की डिजिटल क्रांति ललिता नटराज 34

4.4 पुस्तकालय : ज्ञान और रचनात्मकता के प्रवेश द्वार - सुधा मूर्ति 38

4.5 गयाना में भारतीय : 186 वर्षों का संघर्ष और सफलता - डॉ. सीता शाह रोथ 44

05 प्रतिक्रियाएँ 61

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

'मन की बात', यानी देश के सामूहिक प्रयासों की बात, देश की उपलब्धियों की बात, जन-जन के सामर्थ्य की बात, 'मन की बात' यानी देश के युवा सपनों, देश के नागरिकों की आकांक्षाओं की बात। मैं पूरे महीने, 'मन की बात' का इंतजार करता रहता हूँ ताकि आपसे सीधा संवाद कर सकूँ। कितने ही सारे संदेश, कितने ही messages! मेरा पूरा प्रयास रहता है कि ज़्यादा-से-ज़्यादा संदेश को पढ़ूँ, आपके सुझावों पर मंथन करूँ।

साथियो, आज बड़ा ही खास दिन है - आज NCC दिवस है। NCC का नाम सामने आते ही हमें स्कूल-कॉलेज के दिन याद आ जाते हैं। मैं स्वयं भी NCC Cadet रहा हूँ, इसलिए पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इससे मिला अनुभव मेरे लिए अनमोल है। 'NCC' युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व और सेवा की भावना पैदा करती है। आपने अपने आस-पास देखा होगा, जब भी कहीं कोई आपदा होती है, चाहे बाढ़ की स्थिति हो, कहीं भूकम्प आया हो, कोई हादसा हुआ हो, वहाँ मदद करने के लिए NCC के cadets ज़रूर मौजूद हो जाते हैं। आज देश में NCC को मज़बूत करने के लिए लगातार काम हो रहा है। 2014 में करीब 14 लाख युवा NCC से जुड़े थे। अब 2024 में 20 लाख से ज़्यादा युवा NCC से जुड़े हैं। पहले के मुकाबले पाँच हज़ार और

साहचर्य को प्रोत्साहन, आशान्वित होता भारत का भविष्य

नए स्कूल-कॉलेजों में अब NCC की सुविधा हो गई है और सबसे बड़ी बात, पहले NCC में girls cadets की संख्या करीब 25 (percent) के आस-पास ही होती थी। **अब NCC में girls cadets की संख्या करीब-करीब 40% (percent) हो गई है।** बॉर्डर किनारे रहने वाले युवाओं को ज़्यादा-से-ज़्यादा NCC से जोड़ने का अभियान भी लगातार जारी है। मैं युवाओं से आग्रह करूँगा कि ज़्यादा-से-ज़्यादा संख्या में NCC से जुड़ें। आप देखिएगा आप किसी भी career में जाएँ, NCC से आपके व्यक्तित्व निर्माण में बड़ी मदद मिलेगी।

साथियो, विकसित भारत के निर्माण में युवाओं का रोल बहुत बड़ा है। युवा मन जब एकजुट होकर देश की आगे की यात्रा के लिए मंथन करते हैं, चिंतन करते हैं, तो निश्चित रूप से इसके ठोस रास्ते निकलते हैं। आप जानते हैं 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर देश 'युवा दिवस' मनाता है। अगले साल स्वामी विवेकानंद जी की 162वीं जयंती है। इस बार इसे बहुत ख़ास तरीके से मनाया जाएगा। **इस अवसर पर 11-12 जनवरी को दिल्ली के भारत मंडपम में युवा विचारों का महाकुम्भ होने जा रहा है और इस पहल का नाम है 'विकसित भारत Young Leaders Dialogue'। भारत-भर से करोड़ों युवा इसमें भाग लेंगे। गाँव, block, ज़िले, राज्य और वहाँ से निकलकर चुने हुए ऐसे दो हज़ार युवा भारत मंडपम में 'विकसित भारत Young Leaders**

Dialogue' के लिए जुटेंगे। आपको याद होगा, मैंने लाल किले की प्राचीर से ऐसे युवाओं से राजनीति में आने का आह्वान किया है, जिनके परिवार का कोई भी व्यक्ति और पूरे परिवार का political background नहीं है, ऐसे एक लाख युवाओं को, नए युवाओं को, राजनीति से जोड़ने के लिए देश में कई तरह के विशेष अभियान चलेंगे। 'विकसित भारत Young Leaders Dialogue' भी ऐसा ही एक प्रयास है। **इसमें देश और विदेश से experts आएँगे। अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हस्तियाँ भी रहेंगी। मैं भी इसमें ज़्यादा-से-ज़्यादा समय उपस्थित रहूँगा। युवाओं को सीधे हमारे सामने अपने Ideas को रखने का अवसर मिलेगा। देश इन Ideas को कैसे आगे लेकर जा सकता है, कैसे एक ठोस roadmap बन सकता है, इसका एक blueprint तैयार किया जाएगा, तो आप भी तैयार हो जाइए, जो भारत के भविष्य का निर्माण करने वाले हैं, जो देश की भावी पीढ़ी हैं, उनके लिए ये बहुत बड़ा मौका आ रहा है। आइए, मिलकर देश बनाएँ, देश को विकसित बनाएँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हम अक्सर ऐसे युवाओं की चर्चा करते हैं, जो नि:स्वार्थ भाव से समाज के लिए काम कर रहे हैं। ऐसे कितने ही युवा हैं, जो लोगों की छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान निकालने में जुटे हैं। हम अपने आस-पास देखें तो कितने ही लोग दिख जाते हैं, जिन्हें किसी-ना-किसी तरह की मदद चाहिए, कोई जानकारी चाहिए। मुझे ये जानकर अच्छा लगा; कुछ युवाओं ने समूह बनाकर इस तरह की बात को भी address किया है जैसे लखनऊ के रहने वाले वीरेन्द्र हैं, वो बुज़ुर्गों को Digital life certificate के काम में मदद करते हैं। **आप जानते हैं कि नियमों के मुताबिक सभी Pensioners को साल में एक बार Life Certificate जमा कराना होता है। 2014 तक इसकी प्रक्रिया यह थी इसे बैंकों में जाकर बुज़ुर्ग को खुद जमा करना पड़ता था। आप कल्पना**

कर सकते हैं कि इससे हमारे बुज़ुर्गों को कितनी असुविधा होती थी। अब ये व्यवस्था बदल चुकी है। अब Digital Life Certificate देने से चीजें बहुत ही सरल हो गई हैं, बुज़ुर्गों को बैंक नहीं जाना पड़ता। बुज़ुर्गों को Technology की वजह से कोई दिक्कत न आए, इसमें वीरेन्द्र जैसे युवाओं की बड़ी भूमिका है। वो अपने क्षेत्र के बुज़ुर्गों को इसके बारे में जागरूक करते रहते हैं। इतना ही नहीं, वो बुज़ुर्गों को tech savvy भी बना रहे हैं। **ऐसे ही प्रयासों से आज Digital Life certificate पाने वालों की संख्या 80 लाख के आँकड़े को पार कर गई है।** इनमें से दो लाख से ज़्यादा ऐसे बुज़ुर्ग हैं, जिनकी आयु 80 के भी पार हो गई है।

साथियो, कई शहरों में युवा बुज़ुर्गों को Digital क्रांति में भागीदार बनाने के लिए भी आगे आ रहे हैं। भोपाल के महेश ने अपने मोहल्ले के कई बुज़ुर्गों को Mobile के माध्यम से Payment करना सिखाया है। इन बुज़ुर्गों के पास smart phone तो था, लेकिन उसका सही उपयोग बताने वाला कोई नहीं था। बुज़ुर्गों को Digital arrest के ख़तरे से बचाने के लिए भी युवा आगे आए हैं। अहमदाबाद के राजीव लोगों को Digital Arrest के ख़तरे से आगाह करते हैं। मैंने 'मन की बात' के पिछले episode में Digital Arrest की चर्चा की थी। इस तरह के अपराध के सबसे ज्यादा शिकार बुज़ुर्ग ही बनते हैं। ऐसे में हमारा दायित्व है कि हम उन्हें जागरूक बनाएँ और cyber fraud से बचने में मदद करें। **हमें बार-बार लोगों को समझाना होगा कि Digital Arrest नाम का सरकार में कोई भी प्रावधान नहीं है, ये सरासर झूठ, लोगों को फँसाने का एक षड्यन्त्र है। मुझे ख़ुशी है कि हमारे युवा साथी इस काम में पूरी संवेदनशीलता से हिस्सा ले रहे हैं और दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आजकल बच्चों की पढ़ाई को लेकर कई तरह के प्रयोग हो रहे हैं। कोशिश यही है कि हमारे बच्चों में creativity और बढ़े, किताबों के लिए उनमें प्रेम और बढ़े, **कहते भी हैं 'किताबें' इंसान की सबसे अच्छी दोस्त**

होती हैं और अब इस दोस्ती को मजबूत करने के लिए Library से ज़्यादा अच्छी जगह और क्या होगी। मैं चेन्नई का एक उदाहरण आपसे share करना चाहता हूँ। यहाँ बच्चों के लिए एक ऐसी library तैयार की गई है, जो creativity और learning का Hub बन चुकी है। इसे प्रकृत् अरिवगम् के नाम से जाना जाता है। इस library का Idea, technology की दुनिया से जुड़े श्रीराम गोपालन जी की देन है। विदेश में अपने काम के दौरान वे latest technology की दुनिया से जुड़े रहे, लेकिन वो बच्चों में पढ़ने और सीखने की आदत विकसित करने के बारे में भी सोचते रहे। भारत लौटकर उन्होंने प्रकृत् अरिवगम् को तैयार किया। इसमें तीन हजार से अधिक किताबें हैं, जिन्हें पढ़ने के लिए बच्चों में होड़ लगी रहती है। किताबों के अलावा इस library में होने वाली कई तरह की activities भी बच्चों को लुभाती हैं। Story Telling session हो, Art Workshops हो, Memory Training Classes, Robotics Lesson या फिर Public Speaking, यहाँ हर किसी के लिए कुछ-न-कुछ ज़रूर है, जो उन्हें पसंद आता है।

साथियो, हैदराबाद में 'Food 4 Thought' Foundation ने भी कई शानदार libraries बनाई हैं। इनका भी प्रयास यही है कि बच्चों को ज्यादा-से-ज्यादा विषयों पर ठोस जानकारी के साथ पढ़ने के लिए किताबें मिलें। बिहार में गोपालगंज के 'Prayog Library' की चर्चा तो आस-पास के कई शहरों में होने लगी है। इस library से करीब 12 गाँवों के युवाओं को किताबें पढ़ने की सुविधा मिलने लगी है, साथ ही ये library पढ़ाई में मदद करने वाली दूसरी

ज़रूरी सुविधाएँ भी उपलब्ध करा रही है। कुछ libraries तो ऐसी हैं, जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में students के बहुत काम आ रही हैं। ये देखना वाकई बहुत सुखद है कि समाज को सशक्त बनाने में आज library का बेहतरीन उपयोग हो रहा है। **आप भी किताबों से दोस्ती बढ़ाइए और देखिए कैसे आपके जीवन में बदलाव आता है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, परसों रात ही मैं दक्षिण अमेरिका के देश गयाना से लौटा हूँ। भारत से हजारों किलोमीटर दूर गयाना में भी एक 'Mini भारत' बसता है। आज से लगभग 180 वर्ष पहले गयाना में भारत के लोगों को खेतों में मजदूरी के लिए, दूसरे कामों के लिए ले जाया गया था। आज गयाना में भारतीय मूल के लोग राजनीति, व्यापार, शिक्षा और संस्कृति के हर क्षेत्र में गयाना का नेतृत्व कर रहे हैं। गयाना के राष्ट्रपति डॉ. इरफान अली भी भारतीय मूल के हैं, जो अपनी भारतीय विरासत पर गर्व करते हैं। जब मैं गयाना में था, तभी मेरे मन में एक विचार आया था, जो मैं 'मन की बात' में आपसे share कर रहा हूँ। **गयाना की तरह ही दुनिया के दर्जनों देशों में लाखों की संख्या में भारतीय हैं। दशकों पहले की 200-300 साल पहले की उनके पूर्वजों की अपनी कहानियाँ हैं। क्या आप ऐसी कहानियों को खोज सकते हैं कि किस तरह भारतीय प्रवासियों ने अलग-अलग देशों में अपनी पहचान बनाई! कैसे उन्होंने वहाँ की आज़ादी की लड़ाई के अंदर हिस्सा लिया! कैसे उन्होंने अपनी भारतीय विरासत को जीवित रखा? मैं चाहता हूँ कि आप ऐसी सच्ची कहानियों को खोजें और मेरे साथ share करें। आप इन कहानियों को NaMo App पर या MyGov पर #IndianDiasporaStories के साथ भी share कर सकते हैं।**

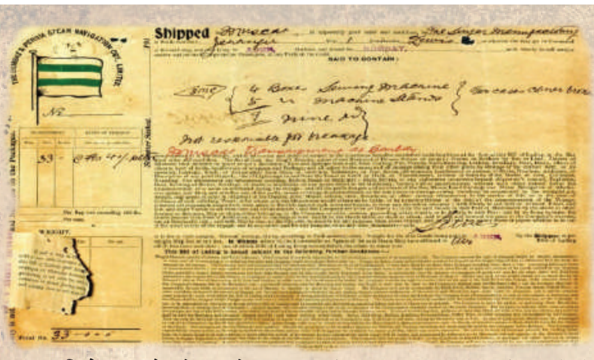

साथियो, आपको ओमान में चल रहा एक extraordinary project भी बहुत दिलचस्प लगेगा। अनेकों भारतीय परिवार कई शताब्दियों से ओमान में रह रहे हैं। इनमें से ज्यादातर गुजरात के कच्छ से जाकर बसे हैं। इन लोगों ने व्यापार के महत्त्वपूर्ण link तैयार किए थे। आज भी उनके पास ओमानी नागरिकता है, लेकिन भारतीयता उनकी रग-रग में बसी है। **ओमान में भारतीय दूतावास और National Archives of India के सहयोग से एक team ने इन परिवारों की history को preserve करने का काम शुरू किया है। इस अभियान के तहत अब तक हजारों documents जुटाए जा चुके हैं। इनमें diary, account book, ledgers, letters और telegram शामिल हैं। इनमें से कुछ दस्तावेज तो सन् 1838 के भी हैं। ये दस्तावेज भावनाओं से भरे हुए हैं। बरसों पहले जब वो ओमान पहुँचे, तो उन्होंने किस प्रकार का जीवन जिया, किस तरह के सुख-दुख का सामना किया, और ओमान के लोगों के साथ उनके सम्बंध कैसे आगे बढ़े, ये सब कुछ इन दस्तावेजों का हिस्सा है। 'Oral History Project' ये भी इस mission का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। इस mission में वहाँ के वरिष्ठ लोगों ने अपने अनुभव साझा किए हैं। लोगों ने वहाँ अपने रहन-सहन से जुड़ी बातों को विस्तार से बताया है।**

साथियो ऐसा ही एक 'Oral History Project' भारत में भी हो रहा

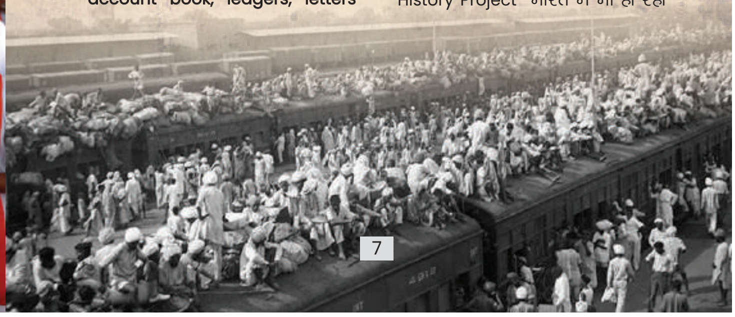

है। इस project के तहत इतिहास प्रेमी देश के विभाजन के कालखंड में पीड़ितों के अनुभवों का संग्रह कर रहे हैं। अब देश में ऐसे लोगों की संख्या कम ही बची है, जिन्होंने विभाजन की विभीषिका को देखा है। ऐसे में यह प्रयास और ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है।

साथियो, जो देश, जो स्थान, अपने इतिहास को सँजोकर रखता है, उसका भविष्य भी सुरक्षित रहता है। इसी सोच के साथ एक प्रयास हुआ है, जिसमें गाँवों के इतिहास को सँजोने वाली एक Directory बनाई है। समुद्री यात्रा के भारत के पुरातन सामर्थ्य से जुड़े साक्ष्यों को सहेजने का भी अभियान देश में चल रहा है। इसी कड़ी में लोथल में एक बहुत बड़ा Museum भी बनाया जा रहा है, इसके अलावा आपके संज्ञान में कोई manuscript हो, कोई ऐतिहासिक दस्तावेज हो, कोई हस्तलिखित प्रति हो तो उसे भी आप National Archives of India की मदद से सहेज सकते हैं।

साथियो, मुझे Slovakia में हो रहे ऐसे ही एक और प्रयास के बारे में पता चला है, जो हमारी संस्कृति को संरक्षित करने और उसे आगे बढ़ाने से जुड़ा है। **यहाँ पहली बार Slovak language में हमारे उपनिषदों का अनुवाद किया गया है। इन प्रयासों से भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रभाव का भी पता चलता है।** हम सभी के लिए ये गर्व की बात है कि दुनिया-भर में ऐसे करोड़ों लोग हैं, जिनके हृदय में भारत बसता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं आपसे देश की एक ऐसी उपलब्धि साझा करना चाहता हूँ, जिसे सुनकर आपको ख़ुशी भी होगी और गौरव भी होगा और अगर आपने नहीं किया है, तो शायद पछतावा भी होगा। कुछ महीने पहले हमने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान शुरू किया था। इस अभियान में देश-भर के लोगों ने बहुत उत्साह से हिस्सा लिया। **मुझे ये बताते हुए बहुत ख़ुशी हो रही है कि इस अभियान ने सौ करोड़ पेड़ लगाने का अहम पड़ाव पार कर लिया है। सौ**

करोड़ पेड़, वो भी सिर्फ पाँच महीनों में। ये हमारे देशवासियों के अथक प्रयासों से ही सम्भव हुआ है। इससे जुड़ी एक और बात जानकर आपको गर्व होगा। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान अब दुनिया के दूसरे देशों में भी फैल रहा है। **जब मैं गयाना में था, तो वहाँ भी इस अभियान का साक्षी बना। वहाँ मेरे साथ गयाना के राष्ट्रपति डॉ. इरफान अली, उनकी पत्नी की माता जी और परिवार के बाकी सदस्य, 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान में शामिल हुए।**

साथियो, देश के अलग-अलग हिस्सों में ये अभियान लगातार चल रहा है। **मध्य प्रदेश के इंदौर में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत पेड़ लगाने का record बना है– यहाँ 24 घंटे में 12 लाख से ज्यादा पेड़ लगाए गए। इस अभियान की वजह से इंदौर की Revati Hills के बंजर इलाके अब green zone में बदल जाएँगे। राजस्थान के जैसलमेर में इस अभियान के द्वारा एक अनोखा record बना। यहाँ महिलाओं की एक टीम ने एक घंटे में 25 हजार पेड़ लगाए।** माताओं ने माँ के नाम पेड़ लगाया और दूसरों को भी प्रेरित किया। यहाँ एक ही जगह पर पाँच हज़ार से ज़्यादा लोगों ने मिलकर पेड़ लगाए। ये भी अपने आप में एक रिकॉर्ड है। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत कई सामाजिक संस्थाएँ स्थानीय ज़रूरतों के हिसाब से पेड़ लगा रही हैं। उनका प्रयास है कि जहाँ पेड़ लगाए जाएँ, वहाँ पर्यावरण के अनुकूल पूरा Eco System Develop हो। इसलिए ये संस्थाएँ कहीं औषधीय पौधे लगा रहीं हैं, तो कहीं चिड़ियों का बसेरा बनाने के लिए पेड़ लगा रही हैं। बिहार में 'JEEViKA Self Help Group' की महिलाएँ 75 लाख पेड़ लगाने का अभियान चला रही हैं। इन महिलाओं का focus फल वाले पेड़ों पर है, जिससे आने वाले समय में आय भी की जा सके।

साथियो, इस अभियान से जुड़कर कोई भी व्यक्ति अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगा सकता है। अगर माँ साथ है तो उन्हें साथ लेकर आप पेड़ लगा सकते हैं, नहीं तो उनकी तस्वीर साथ में लेकर आप इस अभियान का हिस्सा बन सकते हैं। पेड़ के साथ आप अपनी Selfie भी mygov.in पर पोस्ट कर सकते हैं। माँ, हम सबके लिए जो करती है, हम उनका ऋण कभी नहीं चुका सकते, लेकिन एक पेड़ माँ के नाम लगाकर हम उनकी उपस्थिति को हमेशा के लिए जीवंत बना सकते हैं।

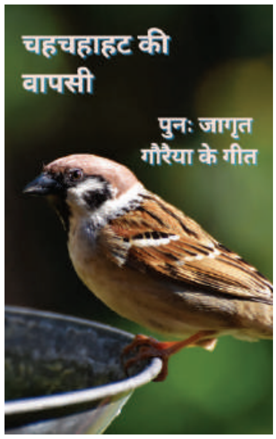

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सभी लोगों ने बचपन में गौरेया या Sparrow को अपने घर की छत पर, पेड़ों पर चहकते हुए ज़रूर देखा होगा। गौरेया को तमिल और मलयालम में कुरुवी, तेलुगु में पिच्चुका और कन्नड़ा में गुब्बी के नाम से जाना जाता है। हर भाषा, संस्कृति में, गौरेया को लेकर किस्से-कहानी सुनाए जाते हैं। **हमारे आस-पास Biodiversity को बनाए रखने में गौरेया का एक बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन आज शहरों में बड़ी मुश्किल से गौरेया दिखती है। बढ़ते शहरीकरण की वजह से गौरेया हमसे दूर चली गई है। आज की पीढ़ी के ऐसे बहुत से बच्चे हैं, जिन्होंने गौरेया को सिर्फ तस्वीरों या वीडियो में देखा है। ऐसे बच्चों के जीवन में इस प्यारी पक्षी की वापसी के लिए कुछ अनोखे प्रयास हो रहे हैं।** चेन्नई के कूडुगल ट्रस्ट ने गौरेया की आबादी बढ़ाने के लिए स्कूल के बच्चों को अपने अभियान में शामिल किया है। संस्थान के लोग स्कूलों में जाकर बच्चों को बताते हैं कि गौरेया रोज़मर्रा के जीवन में कितनी महत्त्वपूर्ण है। ये संस्थान बच्चों को गौरेया का घोंसला बनाने की training देते हैं। इसके लिए संस्थान के लोगों ने बच्चों को लकड़ी का एक छोटा सा घर बनाना सिखाया। इसमें गौरेया के रहने, खाने का इंतजाम किया। ये ऐसे घर होते हैं, जिन्हें किसी भी इमारत की बाहरी दीवार पर या पेड़ पर लगाया जा सकता है। बच्चों ने इस अभियान में उत्साह के साथ हिस्सा लिया और गौरेया के लिए बड़ी संख्या में घोंसला बनाना शुरू कर दिया। पिछले चार वर्षों में संस्था ने गौरेया के लिए ऐसे दस हज़ार घोंसले तैयार किए हैं। कूडुगल ट्रस्ट की इस पहल से आस-पास के इलाकों में गौरेया की आबादी बढ़नी शुरू हो गई है। आप भी अपने आस-पास ऐसे प्रयास करेंगे तो निश्चित तौर पर गौरेया फिर से हमारे जीवन का हिस्सा बन जाएगी।

स्वच्छ भारत अभियान

जन भागीदारी, साफ़ शहर एवं स्वस्थ जनजीवन के साकार होते सपने

साथियो, कर्नाटका के मैसुरू की एक संस्था ने बच्चों के लिए 'Early Bird' नाम का अभियान शुरू किया है। ये संस्था बच्चों को पक्षियों के बारे में बताने के लिए ख़ास तरह की library चलाती है। इतना ही नहीं, बच्चों में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का भाव पैदा करने के लिए 'Nature Education Kit' तैयार किया है। इस Kit में बच्चों के लिए Story Book, Games, Activity Sheets और jig-saw puzzles हैं। ये संस्था शहर के बच्चों को गाँवों में लेकर जाती है और उन्हें पक्षियों के बारे में बताती है। इस संस्था के प्रयासों की वजह से बच्चे पक्षियों की अनेक प्रजातियों को पहचानने लगे हैं। 'मन की बात' के श्रोता भी इस तरह के प्रयास से बच्चों में अपने आस-पास को देखने, समझने का अलग नज़रिया विकसित कर सकते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपने देखा होगा, जैसे ही कोई कहता है 'सरकारी दफ्तर' तो आपके मन में फाइलों के ढेर की तस्वीर बन जाती है। आपने फिल्मों में भी ऐसा ही कुछ देखा होगा। सरकारी दफ्तरों में इन फाइलों के ढेर पर कितने ही मजाक बनते रहते हैं, कितनी ही कहानियाँ लिखी जा चुकी हैं। बरसों-बरस तक ये फाइलें Office में पड़े-पड़े धूल से भर जाती थीं, वहाँ गंदगी होने लगती थी। **ऐसी दशकों पुरानी फाइलों और Scrap को हटाने के लिए एक विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। आपको ये जानकर ख़ुशी होगी कि सरकारी विभागों में इस अभियान के अद्भुत परिणाम सामने आए हैं। साफ-सफाई से दफ्तरों में काफी जगह खाली हो गई है। इससे दफ्तर में काम करने वालों में एक Ownership का भाव भी आया है। अपने काम करने की जगह को स्वच्छ रखने की गम्भीरता भी उनमें आई है।**

साथियो, आपने अक्सर बड़े-बुज़ुर्गों को ये कहते सुना होगा कि जहाँ स्वच्छता होती है, वहाँ लक्ष्मी जी का वास होता है। **हमारे यहाँ 'कचरे से कंचन' का विचार बहुत पुराना है। देश के कई हिस्सों में**

'युवा' बेकार समझी जाने वाली चीजों को लेकर कचरे से कंचन बना रहे हैं। तरह-तरह के Innovation कर रहे हैं। इससे वो पैसे कमा रहे हैं, रोजगार के साधन विकसित कर रहे हैं। ये युवा अपने प्रयासों से sustainable lifestyle को भी बढ़ावा दे रहे हैं। मुम्बई की दो बेटियों का ये प्रयास वाकई बहुत प्रेरक है। अक्षरा और प्रकृति नाम की ये दो बेटियाँ, कतरन से फैशन के सामान बना रही हैं। आप भी जानते हैं कपड़ों की कटाई-सिलाई के दौरान जो कतरन निकलती है, इसे बेकार समझकर फेंक दिया जाता है। अक्षरा और प्रकृति की Team उन्हीं कपड़ों के कचरे को Fashion Product में बदलती है। कतरन से बनी टोपियाँ, Bag हाथो-हाथ बिक भी रही है।

साथियो, साफ़-सफ़ाई को लेकर UP के कानपुर में भी अच्छी पहल हो रही है। यहाँ कुछ लोग रोज सुबह Morning Walk पर निकलते हैं और गंगा के घाटों पर फैले Plastic और अन्य कचरे को उठा लेते हैं। इस समूह को 'Kanpur Ploggers Group' नाम दिया गया है। इस मुहिम की शुरुआत कुछ दोस्तों ने मिलकर की थी। धीरे-धीरे ये जन भागीदारी का बड़ा अभियान बन गया। शहर के कई लोग इसके साथ जुड़ गए हैं। इसके सदस्य अब दुकानों और घरों से भी कचरा उठाने लगे हैं। इस कचरे से Recycle Plant में tree guard तैयार किए जाते हैं, यानी इस Group के लोग कचरे से बने tree guard से पौधों की सुरक्षा भी करते हैं।

साथियो, छोटे-छोटे प्रयासों से कैसी बड़ी सफलता मिलती है, इसका एक उदाहरण असम की इतिशा भी है। इतिशा की पढ़ाई-लिखाई दिल्ली और पुणे में हुई है। इतिशा corporate दुनिया की चमक-दमक छोड़कर अरुणाचल की सांगती घाटी को साफ बनाने में जुटी हैं। पर्यटकों की वजह से वहाँ काफी plastic waste जमा होने लगा था। वहाँ की नदी जो कभी साफ़ थी, वो plastic waste की वजह से प्रदूषित हो गई थी। इसे साफ करने के लिए इतिशा स्थानीय लोगों के साथ मिलकर काम कर रही है। उनके group के लोग वहाँ आने वाले tourist को जागरूक करते हैं और plastic waste को collect करने के लिए पूरी घाटी में बाँस से बने कूड़ेदान लगाते हैं।

साथियो, ऐसे प्रयासों से भारत के स्वच्छता अभियान को गति मिलती है। ये निरंतर चलते रहने वाला अभियान है। आपके आस-पास भी ऐसा जरूर होता ही होगा। आप मुझे ऐसे प्रयासों के बारे में ज़रूर लिखते रहिए।

साथियो, 'मन की बात' के इस episode में फिलहाल इतना ही। मुझे तो पूरे महीने आपकी प्रतिक्रियाओं, पत्रों और सुझावों का खूब इंतजार रहता है। हर महीने आने वाले आपके संदेश मुझे और बेहतर करने की प्रेरणा देते हैं। अगले महीने हम फिर मिलेंगे, 'मन की बात' के एक और अंक में– देश और देशवासियों की नई उपलब्धियों के साथ, तब तक के लिए आप सभी देशवासियों को मेरी ढेर सारी शुभकामनाएँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन
की
बात
प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

नेशनल कैडेट कोर

युवाओं के लिए राष्ट्र सेवा का आदर्श

“मैं स्वयं भी NCC Cadet रहा हूँ, इसलिए पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इससे मिला अनुभव मेरे लिए अनमोल है। NCC युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व और सेवा की भावना पैदा करती है।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी), लम्बे समय से भारत में युवाओं के विकास और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला रहा है। 1948 में अपनी स्थापना के बाद से एनसीसी ने देश के युवाओं और अनुशासन, देशभक्ति तथा राष्ट्र सेवा के आदर्शों के बीच एक पुल के रूप में कार्य किया है। अपने संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से एनसीसी ने एकता को बढ़ावा देने, नेतृत्व विकसित करने और अगली पीढ़ी को विभिन्न क्षमताओं से लैस करके देश की सेवा करने और उसे मज़बूत करने में बहुत योगदान दिया है। ‘वर्दी’ से ‘एकता’ में परिवर्तन यह बताता है कि कैसे एनसीसी भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाने और देश के विकास में योगदान देने में सहायक रहा है।

अनुशासन और नेतृत्व का प्रतीकः भारतीय समाज पर एनसीसी के प्रभाव का मूल युवाओं में अनुशासन और नेतृत्व पैदा करने की क्षमता में निहित है। एनसीसी की वर्दी पहनना सिर्फ गर्व की बात नहीं है; यह कर्त्तव्य, सम्मान और जिम्मेदारी के मूल्यों का प्रतीक है। कैडेटों को कठोर प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है, जिसमें शारीरिक फिटनेस, अभ्यास, नेतृत्व अभ्यास और सामुदायिक सेवा शामिल है। ये गतिविधियाँ युवाओं को कड़ी मेहनत, टीम वर्क और परिवर्तनशीलता का महत्त्व सिखाने के लिए डिजाइन की गई हैं। इनके माध्यम से एनसीसी ऐसे व्यक्तियों को तैयार करता है, जो जिम्मेदारियाँ निभा सकते हैं और आत्मविश्वास के साथ दूसरों का नेतृत्व कर सकते हैं।

नेतृत्व विकास एनसीसी का मुख्य फोकस है। कैडेटों को अपनी इकाइयों के भीतर नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे निर्णय लेने, समस्या-समाधान और संघर्ष-समाधान जैसे कौशल विकसित करने में मदद मिलती है। ये कौशल न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए, बल्कि राष्ट्र निर्माण के लिए भी फायदेमंद हैं, क्योंकि राष्ट्र के सामने आने वाली जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावी नेतृत्व आवश्यक है। भारत के तेज़ी से आगे बढ़ते और विविध समाज में एकता, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी के मूल्यों को समझने वाले नेता समुदायों को समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

विविधता के बीच राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना : भाषाओं, संस्कृतियों, धर्मों और क्षेत्रों तक फैली हुई भारत की विशाल विविधता को अक्सर ताकत और चुनौती, दोनों के रूप में देखा जाता है। एनसीसी साझा अनुभवों के माध्यम से एकता को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देश के विभिन्न हिस्सों से युवा कैडेट प्रशिक्षण शिविरों, साहसिक गतिविधियों और सामुदायिक सेवा परियोजनाओं के लिए एक साथ आते हैं। उनके बीच संवाद, उन्हें सांस्कृतिक और क्षेत्रीय मतभेदों को दूर करने, दोस्ती तथा समझ का सम्बंध बनाने में सहायक होता है।

विभिन्न पृष्ठभूमियों से युवाओं को एक साथ लाकर, एनसीसी राष्ट्रीय पहचान की भावना बनाने में मदद करता है। कैडेट सीखते हैं कि उनकी अलग-अलग पृष्ठभूमि के बावजूद वे सभी एक बड़े राष्ट्रीय ढाँचे का हिस्सा हैं। एनसीसी का एकता पर ज़ोर भारत के सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों से कैडेटों को एक साथ काम करने, अनुभव साझा करने

“एनसीसी भाषा, संस्कृति और भौगोलिक बाधाओं को पार करते हुए भारत के हर कोने से युवाओं को एक साथ लाता है।”

– लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह
महानिदेशक, राष्ट्रीय कैडेट कोर

और सामूहिक कार्रवाई में शामिल होने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जिससे भारत के बहुलवादी समाज की गहरी समझ पैदा होती है।

युवाओं को राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के साथ एनसीसी का एक और महत्त्वपूर्ण योगदान युवाओं को राष्ट्र की रक्षा के लिए तैयार करने में इसकी भूमिका है। एक अर्धसैनिक संगठन के रूप में एनसीसी सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य कैडेटों को सैनिक बनाना नहीं, बल्कि उनमें सेवा, अनुशासन और देशभक्ति की भावना पैदा करना है। बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण के माध्यम से कैडेट प्राथमिक चिकित्सा, हथियार संचालन और जीवन-रक्षा की तकनीक जैसे आवश्यक कौशल सीखते हैं। हालाँकि केवल कुछ कैडेट ही अंततः सशस्त्र बलों में शामिल हो सकते हैं, लेकिन रक्षा-सम्बंधी गतिविधियों के समग्र प्रदर्शन से देश की सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में मदद मिलती है।

एनसीसी सशस्त्र बलों के लिए प्रतिभा पूल के रूप में कार्य करके भारत की रक्षा तैयारियों में भी योगदान देता है। कई पूर्व कैडेट एनसीसी में अपने समय के दौरान सीखे गए मूल्यों और कौशल का उपयोग करते हुए भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना में सेवा करने जाते हैं। ये अक्सर राष्ट्रीय एकता के लिए राजदूत के रूप में काम करते हैं और अपने साथियों तथा समुदायों में अनुशासन एवं देशभक्ति के आदर्शों का प्रसार करते हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व को सशक्त बनाना : रक्षा क्षेत्र से परे एनसीसी युवाओं में सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ पैदा करने में सक्रिय भूमिका निभाता है। कैडेट अक्सर आपदा राहत, रक्तदान अभियान, पर्यावरण संरक्षण परियोजनाओं और स्वास्थ्य तथा स्वच्छता पर जागरूकता अभियान जैसी सामुदायिक सेवा गतिविधियों में शामिल होते हैं। ये गतिविधियाँ न केवल सामाजिक मुद्दों को सम्बोधित करने में साथ ही कैडेटों में व्यावहारिक अनुभव

प्रदान करती हैं, यह साथी नागरिकों के प्रति सहानुभूति तथा कर्त्तव्य की भावना भी पैदा करती हैं।

एनसीसी अपने सदस्यों को समाज में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे वे दूसरों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में अपनी भूमिका के बारे में अधिक जागरूक हो पाते हैं। सामाजिक जिम्मेदारी की यह भावना नागरिक जुड़ाव की संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण है, जहाँ व्यक्ति अपने परिवेश तथा समाज की भलाई के लिए मिलकर काम करते हैं। चाहे प्राकृतिक आपदा हो या पर्यावरणीय संकट, एनसीसी कैडेट प्रभावित समुदायों को सहायता और राहत प्रदान करने में हमेशा आगे रहे हैं।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) ने अनुशासन, नेतृत्व, एकता और सामाजिक जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित करके भारत को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विविध पृष्ठभूमि के युवाओं को शामिल करके और उनमें सेवा तथा देशभक्ति के मूल्यों को स्थापित करके एनसीसी ने एक अधिक एकीकृत और एकजुट राष्ट्र के निर्माण में योगदान दिया है। जैसे-जैसे देश विकास कर रहा है, यह सुनिश्चित करने में एनसीसी की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि युवा भविष्य में भारत का मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक मूल्यों और कौशल से लैस हों। वर्दी पहनने से लेकर एकता को बढ़ावा देने तक, एनसीसी भारत की नियति को तय करने और भविष्य के नेताओं को तैयार करने में एक स्थायी शक्ति बनी हुई है।

प्रगति के पथप्रदर्शक युवा

“2014 में करीब 14 लाख युवा NCC से जुड़े थे। अब 2024 में 20 लाख से ज़्यादा युवा NCC से जुड़े हैं। पहले के मुकाबले पाँच हज़ार और नए स्कूल-कॉलेजों में अब NCC की सुविधा हो गई है और सबसे बड़ी बात, पहले NCC में girls cadets की संख्या करीब 25 प्रतिशत के आस-पास ही होती थी। अब NCC में girls cadets की संख्या करीब-करीब 40 प्रतिशत हो गई है।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

क्या

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) भारतीय सशस्त्र बलों की युवा शाखा है। इसका मुख्यालय भारत की राजधानी नई दिल्ली में है।

कब

भारत में एनसीसी का गठन 1948 में हुआ था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने नवम्बर, 1948 के आखिरी रविवार को दिल्ली में पहली एनसीसी इकाई की स्थापना के लिए आयोजित समारोह की अध्यक्षता की थी। इस दिन को पारम्परिक रूप से ‘एनसीसी दिवस’ के रूप में मनाया जाता है।

क्यों

11 अगस्त, 1978 को आयोजित 11वीं केंद्रीय सलाहकार समिति (सीएसी) की बैठक में एनसीसी के लिए एक आदर्श वाक्य की आवश्यकता पर चर्चा की गई थी। सुझाए गए आदर्श वाक्य थे– ‘कर्त्तव्य और अनुशासन’, ‘कर्त्तव्य, एकता और अनुशासन’, ‘कर्त्तव्य और एकता’, ‘एकता और अनुशासन’। एनसीसी के लिए आदर्श वाक्य के रूप में ‘एकता और अनुशासन’ के चयन का अंतिम निर्णय 12 अक्तूबर, 1980 को आयोजित 12वीं सीएसी बैठक में लिया गया था।

कैसे

एनसीसी एक उत्तरदायी, शिक्षण आधारित और निरंतर विकसित होने वाला संगठन है। इसकी गतिविधि कुछ मूल मूल्यों द्वारा निर्देशित होती है, जिन्हें एनसीसी के सभी रैंकों में स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर
विकसित भारत के लिए युवा शक्ति

लेफ्टिनेंट जनरल गुरबीरपाल सिंह
महानिदेशक, राष्ट्रीय कैडेट कोर

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी), सबसे बड़ा वर्दीधारी युवा संगठन, 1948 से अस्तित्व में है। इसने युवा मानस को आकार देने और उन गुणों का पोषण करने में लगातार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो उन्हें भविष्य के लीडर बनने के लिए तैयार करते हैं। हमारा आदर्श वाक्य, 'एकता और अनुशासन', युवाओं के लिए मार्गदर्शक शक्ति के रूप में कार्य करता है और उनमें राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता की गहरी भावना पैदा करता है।

नेतृत्व के विकास में एनसीसी की भूमिका

एनसीसी में एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम है, जो अनुशासन, एकता और सामाजिक सेवा का मिश्रण है। यह युवाओं के लिए ऐसा वातावरण तैयार करता है, जहाँ वे अपनी ताकत की खोज कर सकते हैं, चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व करने के लिए आवश्यक गुण विकसित कर सकते हैं।

मूल सिद्धांत : अनुशासन, एकता और सेवा

एनसीसी प्रशिक्षण का आधार तीन मूल्यों में निहित है : अनुशासन, एकता और सेवा। ये मूल्य मात्र शब्द नहीं हैं, बल्कि ऐसे सिद्धांत हैं, जो एनसीसी ढाँचे के भीतर हर कार्रवाई, निर्णय और गतिविधि का मार्गदर्शन करते हैं।

अनुशासन : अनुशासन वह नींव है, जिस पर नेतृत्व का निर्माण होता है। हमारे कैडेट प्रशिक्षण से गुज़रते हैं, जो **समय की पाबंदी, आत्म-नियंत्रण** और **निर्देशों** के पालन पर ज़ोर देता है। यह उन्हें सिखाता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ईमानदारी और संकल्प के साथ कैसे कार्य करना है।

एकता : एनसीसी भाषा, संस्कृति और भौगोलिक बाधाओं को पार करते हुए भारत के हर कोने से युवाओं को एक साथ लाता है। वास्तव में एनसीसी की उपस्थिति हमारे देश के लगभग हर ज़िले में है। संयुक्त प्रशिक्षण शिविरों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और साझा अनुभवों के माध्यम से कैडेट परस्पर विभिन्नताओं की सराहना करना और एक सामान्य लक्ष्य– राष्ट्र की प्रगति की दिशा में काम करना सीखते हैं। एनसीसी **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** जैसे शिविर आयोजित करके विभिन्न क्षेत्रों के युवाओं को एकजुट करता है और 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को बढ़ावा देता है।

सेवा : राष्ट्र, समाज और समुदाय की सेवा का सिद्धांत एनसीसी के केंद्र में है। कैडेट विभिन्न सामाजिक कल्याण की गतिविधियों जैसे रक्तदान शिविर, पर्यावरण संरक्षण पहल और आपदा राहत कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। ये अनुभव न केवल उनमें सामाजिक ज़िम्मेदारी की भावना को बढ़ाते हैं, बल्कि **भावनात्मक सहयोग** के साथ **टीम वर्क** और उनके **आस-पास की दुनिया में बदलाव** लाने की क्षमता भी विकसित करते हैं।

समग्र प्रशिक्षण- भविष्य के लिए तैयारी : एनसीसी द्वारा प्रदान किया जाने वाला प्रशिक्षण केवल अकादमिक शिक्षा नहीं है। कैडेटों के लिए उपलब्ध

गतिविधियों की श्रृंखला यह सुनिश्चित करती है कि वे आवश्यक कौशल हासिल करें, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य: कैडेट नियमित अभ्यास, परेड और शारीरिक अभ्यास से गुज़रते हैं। यह न केवल उन्हें ताकतवर बनाने में मदद करता है, बल्कि उनकी मानसिक दृढ़ता में भी सुधार करता है, जो किसी भी क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका के लिए महत्त्वपूर्ण है।

नेतृत्व शिविर : एनसीसी शिविर वास्तविक दुनिया में नेतृत्व कौशल को निखारने, कैडेटों को टीमों का प्रबंधन करने, त्वरित निर्णय लेने और दबाव की स्थिति में आत्मविश्वास के साथ नेतृत्व करने के तरीके सिखाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हैं।

साहसिक और अन्वेषण गतिविधिया: एनसीसी साहसिक गतिविधियों पर प्रमुखता से ज़ोर देता है, जिसमें पैरा जम्प, ट्रैकिंग, पर्वतारोहण, रॉक क्लाइम्बिंग और कैम्पिंग शामिल हैं। ये गतिविधियाँ न केवल शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देती हैं, बल्कि परिवर्तनशीलता, समस्या-समाधान और जोखिम प्रबंधन भी सिखाती हैं।

सामुदायिक सेवा : समाज की सेवा एनसीसी अनुभव का एक प्रमुख पहलू है। यह उनमें ज़िम्मेदारी की गहरी भावना और दूसरों के कल्याण में योगदान के महत्त्व की समझ पैदा करता है।

एनसीसी के पूर्व कैडेट : एक बार कैडेट, हमेशा एक कैडेट :

एनसीसी का प्रभाव इसके पूर्व कैडेटों द्वारा जीवन के सभी क्षेत्रों में किए गए उल्लेखनीय योगदान से स्पष्ट है और वर्दीधारी बलों में इसका प्रमुख योगदान है। एनसीसी कैडेटों ने अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। वे अपने साथ परिवर्तनशीलता, कार्यनीतिक सोच और विविध टीमों का नेतृत्व करने की क्षमता जैसे गुण रखते हैं, जो किसी भी पेशेवर क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक हैं।

कल का लक्ष्य : भारत के युवाओं को सशक्त बनाना

एनसीसी समय के साथ विकसित हो रहा है, अपने मूल्यों के प्रति सजग रहते हुए युवाओं की बदलती ज़रूरतों के अनुसार स्वयं को ढाल रहा है। तकनीकी प्रगति और वैश्विक कनेक्टिविटी के युग में यह महत्त्वपूर्ण है कि GenZ नेता इन चुनौतियों से निपटने के कौशल से लैस हों। एनसीसी ऐसे युवाओं को तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो न केवल अपने करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करें, बल्कि सेवा, अखंडता और एकता के मूल्यों को भी क़ायम रखें। एनसीसी एक ऐसी संस्था है, जो नेताओं का निर्माण करती है, राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है और समाज की भलाई में योगदान देती है। जैसे-जैसे हम अपनी यात्रा जारी रखते हैं, हम युवाओं को ऐसे नेतृत्व के लिए लीडर के रूप में विकसित करने के अपने मिशन पर दृढ़ रहते हैं, जो भारत को एक समृद्ध और विकसित राष्ट्र बनाने में मार्गदर्शन करेंगे। हम सब मिलकर **विकसित भारत** की **युवा शक्ति** का निर्माण कर रहे हैं।

विकसित भारत यंग-लीडर्स डायलॉग

भारत के युवाओं के लिए कार्रवाई का आह्वान

डॉ. मनसुख मंडाविया
श्रम एवं रोजगार मंत्री और
युवा मामले एवं खेल मंत्री

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने 24 नवम्बर, 2024 को अपने 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' के बारे में बात की। उन्होंने विकसित भारत बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और कहा कि उनकी एकता और प्रयास उन्हें सफलता की ओर ले जाएँगे। उन्होंने उल्लेख किया कि 12 जनवरी, 2025 को स्वामी विवेकानन्द की 162वीं जयंती को बड़े पैमाने पर मनाया जाएगा, जिसमें पुनर्कल्पित राष्ट्रीय युवा महोत्सव, 2025 के हिस्से के रूप में भारत मंडपम में युवा विचारों और दृष्टि का महाकुम्भ आयोजित किया जाएगा।

विकसित भारत चैलेंज, संवाद का एक प्रमुख घटक है और योग्यता-आधारित चार चरणीय प्रतियोगिता है, जिसे युवाओं को विकसित भारत के नेता के तौर पर सशक्त बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। यह कार्यक्रम 25 नवम्बर से एमवाई भारत पोर्टल पर विकसित भारत क्विज के साथ शुरू हो चुका है, जिसमें पिछले दशक में भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में प्रतिभागियों के ज्ञान का परीक्षण किया जाएगा। इसके बाद शॉर्टलिस्ट किए गए उम्मीदवार विकसित भारत के लिए चुने गए महत्वपूर्ण विषयों पर निबंध प्रस्तुत करेंगे, जैसे विकसित भारत के लिए तकनीक, विकास भी विरासत भी, भारत को वैश्विक विनिर्माण पावरहाउस बनाना आदि। राज्य स्तर पर, विभिन्न गाँवों, ब्लॉकों, ज़िलों का प्रतिनिधित्व करने वाले शॉर्टलिस्ट किए गए प्रतिभागी अकाट्य पिचों के माध्यम से विकसित भारत के लिए अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। प्रत्येक राज्य के योग्य युवाओं को 11-12 जनवरी, 2025 को भारत मंडपम में सीधे प्रधानमंत्री के सामने अपने विचार प्रस्तुत करने का अद्वितीय अवसर मिलेगा।

'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' प्रतिभागियों को विभिन्न क्षेत्रों के पथप्रदर्शकों के साथ जुड़ने का एक अनूठा अवसर भी प्रदान करता है, जिनके अनुभवों ने दुनिया पर गहरा प्रभाव डाला है। युवा, कुछ प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साथ सहयोग करके विकसित भारत के लिए एक व्यापक योजना तैयार करने में योगदान देंगे। इसके अलावा प्रतिभागियों को विभिन्न राज्यों और केंद्रीय मंत्रालयों की युवा-केंद्रित पहलों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनियों में भाग लेने का मौका मिलेगा। इस आयोजन में प्रतिष्ठित नेताओं के साथ गहन विचार-विमर्श पर आधारित सत्र और भारत की जीवंत सांस्कृतिक विरासत को जानने के अवसर शामिल हैं, जो इसे सीखने, सहयोग और राष्ट्र-निर्माण के लिए एक समग्र मंच बनाते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने मन की बात में स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से अपना यह आह्वान दोहराया, जिसमें उन्होंने गैर-राजनीतिक पृष्ठभूमि के 1,00,000 युवाओं से राजनीति और नेतृत्व में शामिल होने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' युवा नेताओं को इस दृष्टिकोण से जोड़ने की एक ऐसी ही पहल है। उन्होंने कहा कि भारत इन विचारों को लागू करने के तरीके तलाशेगा और बातचीत के आधार पर एक रोडमैप और ब्लूप्रिंट विकसित किया जाएगा। प्रधानमंत्री ने युवाओं से एकजुट होने और विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने के अवसरों का लाभ उठाने का आग्रह किया।

भारत जैसे-जैसे 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहा है, यह पहल भविष्य के मशाल वाहकों यानी युवाओं के लिए एक स्पष्ट आह्वान के रूप में कार्य करती है। आइए हम अपने माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान के अनुरूप प्रयास करें और भारत के लिए अपने सपनों को मूर्त वास्तविकता में बदलने के लिए एकजुट हों। 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' एक कार्यक्रम से कहीं अधिक है; यह परिवर्तन को सशक्त बनाने, प्रेरित करने और उत्प्रेरित करने का एक आंदोलन है।

स्वामी विवेकानन्द की जयंती

"आप जानते हैं कि 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द की जयंती पर देश 'युवा दिवस' मनाता है। अगले साल स्वामी विवेकानन्द की 162वीं जयन्ती है। इस बार इसे बेहद खास तरीके से मनाया जाएगा। इस अवसर पर 11-12 जनवरी को दिल्ली के भारत मंडपम में युवा विचारों का महाकुम्भ होने जा रहा है और इस पहल का नाम है 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग'।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ('मन की बात' सम्बोधन में)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' के सम्बोधन में युवाओं को देश के भविष्य को आकार देने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित किया है। उन्होंने नेतृत्व में नए परिदृश्य के महत्त्व पर जोर देते हुए, विशेषकर बिना राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले परिवारों से राजनीति में शामिल होने का आग्रह किया।

युवा कार्यक्रम मंत्रालय ने युवाओं के आदर्श, स्वामी विवेकानन्द की जयंती को यादगार बनाने के लिए आगामी राष्ट्रीय युवा महोत्सव की परिकल्पना करते हुए विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग आयोजित करने का मन बनाया है।

विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग स्वामी विवेकानन्द के युवा सशक्तीकरण और राष्ट्र-निर्माण के शाश्वत आदर्शों की कसौटी के तौर पर खड़ा है। संवाद, सहयोग और योगदान के माध्यम से भारत के युवाओं का चिंतन न केवल स्वामी विवेकानन्द की विरासत का सम्मान करेगा, बल्कि देश को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर भी ले जाएगा।

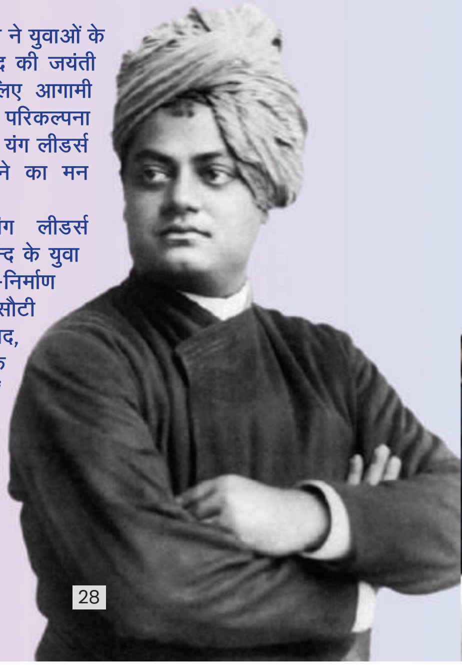

VIKSIT BHARAT Young Leaders Dialogue NATIONAL YOUTH FESTIVAL 2025

विकसित भारत पर केंद्रित युवाओं का महाकुम्भ

इस पहल का उद्देश्य भारत के युवाओं की सामूहिक क्षमता का लाभ उठाकर उन्हें सशक्त बनाना है, ताकि वे राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में सक्रिय योगदान दें। यह पहल राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जाने के लिए युवाओं को सशक्त बनाने के स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग की मुख्य बातें

- विकसित भारत चैलेंज
- पूर्ण सत्र एवं पैनल चर्चाएँ
- विकसित भारत प्रदर्शनी- विजन@2047
- विकसित भारत- एक सांस्कृतिक कल्पनाशीलता

स्वामी विवेकानन्द और उनका विजन

- स्वामी विवेकानन्द ने आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की शक्ति पर जोर दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अपार क्षमता और आंतरिक शक्ति होती है, जिन्हें अनुशासन, आत्म-जागरूकता और आध्यात्मिक अभ्यासों के माध्यम से जागृत किया जा सकता है।
- उन्होंने युवाओं को भय, कमजोरी और आत्मसंदेह पर काबू पाने का आग्रह करते हुए निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा के लिए ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, करुणा और समर्पण जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- एक सामंजस्यपूर्ण और समावेशी समाज के निर्माण हेतु उन्होंने युवाओं के लिए एकता, टीम वर्क और व्यक्तिगत हितों से परे होकर काम करने की वकालत की।

युवा-नेतृत्व में नवाचार और डिजिटल समावेशन
समुदायों का सशक्तीकरण

"कई शहरों में युवा बुज़ुर्गों को Digital क्रांति में भागीदार बनाने के लिए भी आगे आ रहे हैं। इन बुज़ुर्गों के पास Smart Phone तो था लेकिन उसका सही उपयोग बताने वाला कोई नहीं था। बुज़ुर्गों को Digital Arrest के खतरे से बचाने के लिए युवा आगे आए हैं। मुझे खुशी है कि मेरे युवा साथी इस काम में पूरी संवेदनाशीलता से हिस्सा ले रहे हैं।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"आज भारत के युवा 'प्रौद्योगिकी के गुरु' के रूप में गुरु-शिष्य परम्परा की भावना को मूर्त रूप दे रहे हैं, जिससे न केवल उनके परिवार, बल्कि देश भर के समुदाय भी डिजिटल समावेशन के लाभों को अपनाने के लिए सशक्त हो रहे हैं।"

– ललिता नटराज
सीईओ, एनपीसीआई भीम सर्विसेज लिमिटेड (NBSL)

लखनऊ की हलचल भरी गलियों में वीरेन्द्र नामक एक उत्साही युवा अपने समुदाय के बुज़ुर्गों के लिए आशा की किरण बन गया है। वरिष्ठ नागरिकों को डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र प्रदान करके उनके जीवन को सरल बनाना उसका मिशन है।

इसी तरह भोपाल में महेश डिजिटल समावेशन के एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र में प्रयासरत है। वह बुज़ुर्गों को कैशलेस लेन-देन के बारे में बताता है। कई बुज़ुर्ग लोगों के पास स्मार्टफोन तो होते हैं, किंतु उन्हें अक्सर मोबाइल भुगतान जैसी सुविधाओं के इस्तेमाल के बारे में जानकारी नहीं होती।

इस बीच अहमदाबाद में राजीव बुज़ुर्गों को साइबर धोखाधड़ी के खतरों के बारे में शिक्षित करने और उन्हें 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे घोटालों के बारे में सचेत करने के लिए पूरे जोर-शोर से काम करते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात की ये कहानियाँ डिजिटल क्षेत्र के बारे में जानकारी बढ़ाकर समुदायों को सशक्त बनाने में युवाओं के नेतृत्व में की जा रही पहल को लेकर अविश्वसनीय क्षमता को दर्शाती हैं।

डिजिटल समावेशन में एक क्रांति

यह दुनिया दिनों-दिन तेज़ी से प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित हो रही है। ऐसे समय में यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि समाज का हर वर्ग डिजिटल प्रगति तक पहुँच सके और उससे लाभ उठा सके। डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र (जीवन प्रमाण) पहल इस दिशा में एक ऐसा ही कदम है। 2014 में इसे शुरू किया गया था। यह योजना पेंशनभोगियों को अपना जीवन प्रमाणपत्र ऑनलाइन जमा करने की सुविधा प्रदान करती है। इससे वे बैंकों के चक्कर लगाने से बचते हैं। 80 लाख से अधिक पेंशनभोगी इस सेवा का उपयोग कर रहे हैं। इनमें 80 वर्ष से अधिक आयु के 2 लाख व्यक्ति भी शामिल हैं। इस पहल ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए जीवन को काफी आसान बना दिया है।

डिजिटल साक्षरता और समावेशन के लिए सरकार की पहल

भारत सरकार ने समाज के सभी वर्गों के बीच डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ

लागू की हैं। इसमें बुज़ुर्गों के साथ-साथ पूरे समुदायों और परिवारों को बेहतर डिजिटल समावेशन के लिए लक्षित किया गया है। राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन (NDLM) का लक्ष्य प्रति परिवार कम से कम एक व्यक्ति को मूलभूत डिजिटल कौशल के साथ मोबाइल फोन, टैबलेट और कम्प्यूटर का उपयोग करने का प्रशिक्षण देकर सशक्त बनाना है। इसी तरह प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA) ग्रामीण परिवारों पर केंद्रित है। इसके माध्यम से डिजिटल उपकरणों को चलाने, इंटरनेट का इस्तेमाल करने, संवाद करने और कैशलेस लेन-देन जैसे क्षेत्रों में 20 घंटे का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। PMGDISHA के तहत 7.35 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को नामांकित किया गया था और 4.78 करोड़ को सत्यापित किया गया। इससे ग्रामीण भारत में डिजिटल साक्षरता में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई।

डिजीलॉकर और उमंग ऐप जैसे प्लेटफॉर्म से सरकारी सेवाओं तक पहुँच में आसानी

डिजीलॉकर नागरिकों को आधार, पैन कार्ड और शैक्षिक प्रमाणपत्र जैसे महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों की कागजी प्रतियों

की आवश्यकता को समाप्त करते हुए, उन्हें सुरक्षित रूप से संग्रहीत और साझा करने की सुविधा प्रदान करता है। उमंग ऐप विभिन्न सरकारी सेवाओं के लिए वन-स्टॉप समाधान के रूप में कार्य करता है। कर दाखिल करने से लेकर पेंशन विवरण तक पहुँच इसमें शामिल है। इससे रोजमर्रा के काम अधिक सुविधाजनक हो जाते हैं। ये पहल नागरिकों को सामूहिक रूप से सशक्त बनाती हैं। इससे वे भारत के बढ़ते डिजिटल इकोसिस्टम, लाभ उठाने में सक्षम होते हैं।

परिवर्तन के संचालक युवा

सरकार किसी पहल की नींव रखती है। हमारे युवा ही हैं, जो इन पहलों में जान फूँकते हैं। युवा अपने तकनीकी ज्ञान और ऊर्जा के साथ, बुज़ुर्गों को सलाह देने के लिए ख़ासतौर पर जुटे हैं। किसी बुज़ुर्ग व्यक्ति को स्मार्टफोन नेविगेट करना, डिजिटल भुगतान करना या फिशिंग सम्बंधी प्रयास को पहचानना सिखाना भले ही छोटे कदमों की तरह लग सकता है, लेकिन वे समावेशन और सशक्तीकरण के एक बड़े विज़न में योगदान करते हैं।

इसके अलावा ये बातचीत पीढ़ियों के बीच झिझक और हिचक को दूर कर, युवाओं और बुज़ुर्गों के बीच की खाई को पाटती है। इससे युवाओं में लक्ष्य और समुदाय की भावना भी पैदा होती है और वे राष्ट्र-निर्माण में सक्रिय भागीदार बनते हैं।

हम ऐसे प्रयासों की सराहना करते हैं। आइए हम प्रत्येक युवा व्यक्ति की बदलाव लाने की क्षमता को भी पहचानें। निश्चित तौर पर एक व्यक्ति को सशक्त बनाने से समुदायों में परिवर्तन की लहर पैदा हो सकती है, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि भारत की डिजिटल क्रांति में कोई भी युवा या बुज़ुर्ग पीछे न छूटे।

परम्परा से प्रौद्योगिकी तक
युवा नेतृत्व और भारत की डिजिटल क्रांति

ललिता नटराज
सीईओ, एनपीसीआई भीम सर्विसेज लिमिटेड (NBSL)

भारत का समृद्ध इतिहास गुरु-शिष्य परम्परा जैसी शिक्षण पद्धति पर आधारित है, जहाँ ज्ञान हस्तांतरण अत्यंत व्यक्तिगत और गहन कार्य था। गुरुओं ने वेदों और रामायण तथा महाभारत जैसे महाकाव्यों से लेकर गणित, खगोल विज्ञान और आयुर्वेद तक के विषयों पर ज्ञान दिया। इन शिक्षाओं को लिखित रूप में दर्ज किए जाने से बहुत पहले मौखिक रूप से और संवाद के माध्यम से साझा किया जाता था, जिससे विश्वास, सीखने और विकास को बढ़ावा मिलता था।

2024 तक तेज़ी से आगे बढ़ते हुए शिक्षण का लोकाचार निर्बाध रूप से डिजिटल युग में परिवर्तित हो गया है। आज भारत के युवा 'प्रौद्योगिकी के गुरु' के रूप में गुरु-शिष्य परम्परा की भावना को मूर्त रूप दे रहे हैं, जिससे न केवल उनके परिवार, बल्कि देश भर के समुदाय भी डिजिटल समावेशन के लाभों को अपनाने के लिए सशक्त हो रहे हैं।

डिजिटल समावेशन : सामाजिक विकास का मार्ग

डिजिटल समावेशन का अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि आयु, लिंग, स्थान या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, प्रत्येक व्यक्ति को डिजिटल तकनीक के प्रभावी ढंग से उपयोग की सुलभता और क्षमता हासिल हो। बुजुर्गों, छोटे पैमाने के किसानों और अर्ध-कुशल मजदूरों जैसे वंचित समूहों के लिए डिजिटल समावेशन सिर्फ एक सुविधा नहीं है, यह एक जीवन रेखा है।

हाल के वर्षों में भारत ने वास्तव में दुनिया भर में डिजिटल भुगतान के लिए मानक स्थापित किए हैं। यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) जैसे नवाचारों ने वित्तीय लेन-देन को लोकतांत्रिक बना दिया है। प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA) जैसी पहल ने चार करोड़ से अधिक नागरिकों को डिजिटल उपकरणों और सेवाओं का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया है, जिससे भारत की अधिक न्यायसंगत अर्थव्यवस्था की यात्रा तेज़ हो गई है। फिर भी, बाधाएँ बनी हुई हैं, विशेषकर प्रौद्योगिकी से अपरिचित लोगों के लिए। यहीं पर भारत के युवा चेंजमेकर के रूप में उभरे हैं।

देश भर में युवा प्रौद्योगिकी और कमजोर समुदायों के बीच की खाई को पाट रहे हैं। सुरक्षा, संरक्षा, सुविधा और उपयोग में आसानी प्रदान करके झिझकने वाले उपयोगकर्ताओं को बढ़े हुए आत्मविश्वास के साथ डिजिटल भुगतान अपनाने में सक्षम बनाने में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए हाल ही में कई नवीन तरीके पेश किए गए हैं।

भीम जैसे भुगतान ऐप एक सरल उपयोगकर्ता इंटरफेस और कई भाषाओं के माध्यम से भारतीयों के लिए भुगतान को सुलभ बना रहे हैं।

चेंजमेकर्स के रूप में युवा अपने परिवारों को भविष्य के लिए तैयार करने में महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाते हैं। हालाँकि वास्तव में सम्पूर्ण वित्तीय और डिजिटल समावेशन को सक्षम करने के लिए उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर समुदायों को शामिल करने के लिए अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करना होगा। इन क्षेत्रों में, डिजिटल भुगतान को अपनाने के लिए विश्वास और व्यावहारिक सहायता महत्त्वपूर्ण है। सरकार की PMGDISHA ने एक ठोस

नींव रखी है और युवाओं के नेतृत्व वाली पहल को अपने समुदायों की अनूठी ज़रूरतों को समझ कर इसे आगे बढ़ाना जारी रखना चाहिए।

समावेशन में भागीदार के रूप में प्रौद्योगिकी

डिजिटल समावेशन के लिए युवाओं की शिक्षा और डिजिटल भुगतान उपकरणों तक पहुँच को आसान बनाने के लिए सुविधाजनक और उपयोगकर्ता-अनुकूल टचप्वाइंट के निर्माण की आवश्यकता है। भीम जैसे यूपीआई-सक्षम ऐप्स इस प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, भीम ऐप ने बहुभाषी इंटरफेस और आधार आधारित ऑनबोर्डिंग जैसी सुविधाओं के माध्यम से विविध आबादी के लिए डिजिटल भुगतान को सुलभ बना दिया है। आधार आधारित ऑनबोर्डिंग ने दूरदराज और कम सेवा वाले क्षेत्रों के उपयोगकर्ताओं के लिए बाधाओं को कम कर दिया है, इससे पंजीकरण आसान हो गया है और बिना किसी कागजी कार्रवाई के डिजिटल भुगतान प्लेटफॉर्म का लाभ उठाया जा सका है। एक बार जब उपयोगकर्ता डिजिटल भुगतान के साथ सहज हो जाते हैं, तो इस बात की अधिक सम्भावना होती है कि वे अपनी वित्तीय और सामाजिक स्वतंत्रता को बढ़ाते हुए ई-गवर्नेंस पोर्टल, ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म और डिजिटल मार्केटप्लेस का पता लगाने के लिए प्रेरित होंगे।

इसके अलावा भारत की डिजिटल यात्रा में हितधारकों को, सम्भावित धोखाधड़ी जोखिमों के बारे में उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करने में सक्रिय रूप से निवेश करना चाहिए। विश्वास कायम करने और एक सुरक्षित डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र

को बढ़ावा देने के लिए, ग्राहक सुरक्षा को प्राथमिकता देना महत्त्वपूर्ण है, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी में नए लोगों के लिए। ग्राहकों की शिकायतों का त्वरित समाधान करने के लिए एकीकृत विवाद समाधान, विश्वास और ग्राहक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

डिजिटल समावेशन का मार्ग सहयोग के माध्यम से प्रशस्त होता है। सच्चे डिजिटल समावेशन को प्राप्त करने के लिए युवाओं, प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों और सरकार के बीच सहयोग की आवश्यकता है। डिजिटल समावेशन की दिशा में मानवीय प्रयासों के साथ भारत की यात्रा प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है। यह निस्वार्थता, नवाचार और नेतृत्व की भावना ही है, जो भारत को वास्तव में समावेशी और डिजिटल रूप से सशक्त राष्ट्र बनने की दिशा में प्रेरित करेगी। निरंतर प्रयास भारत को डिजिटल समावेशन के लिए बेंचमार्क के रूप में आगे बढ़ाएँगे, साथ मिलकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कोई भी पीछे न छूटे और एक ऐसे समाज का निर्माण भी कर सकते हैं, जहाँ प्रौद्योगिकी बराबरी की भूमिका निभाए।

पुस्तकालय
ज्ञान और रचनात्मकता के प्रवेश द्वार

सुधा मूर्ति
राज्यसभा सांसद,
लेखिका और समाजसेवी

कुछ साल पहले मुझे एक कार्यक्रम के लिए किसी गाँव में आमंत्रित किया गया था। साल की शुरुआत में गाँव के दौरे के बीच मैंने बहुत से छोटे बच्चों को परिसर की छतों की दीवारों पर बैठे, सड़कों पर घूमते, समूहों में बैठते और कुछ खेल खेलते हुए देखा। मुझे लगा कि वे अपना क़ीमती समय बर्बाद कर रहे हैं। ग्राम प्रधान ने भी हमारा भविष्य यानी बच्चों को लेकर अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हमने इन बच्चों को समझाने की कोशिश की है, लेकिन वे नहीं सुनते और अगर इन्हे ज़्यादा समझाते हैं तो ये भाग जाते हैं। स्कूल के समय के बाद और ख़ासकर छुट्टियों के दौरान, इन्हें सम्भालना मुश्किल होता है तथा माता-पिता अक्सर इन्हें समझाते-समझाते थक जाते हैं।

मैंने सहजता से पूछा, "क्या आपके गाँव में कोई पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न प्रकार की पुस्तकें हों और वहाँ बैठकर पढ़ने का अच्छा माहौल हो?"

वे मेरे इस प्रश्न से आश्चर्यचकित हो गए और उन्होंने कहा, "हमारे सभी स्कूलों में एक पुस्तकालय है और प्रत्येक कक्षा को एक सप्ताह, पढ़ने का समय मिलता है, तो हमें किसी अन्य पुस्तकालय की आवश्यकता क्यों है?"

"उन युवा वयस्कों का क्या, जो स्कूल नहीं जाते?"

उन्होंने एक क्षण सोचा और कहा, "वे पढ़ते नहीं हैं।"

मैं मुस्कुराई और उनसे बातचीत जारी रखते हुए कहा कि अनुकूल वातावरण के साथ एक पुस्तकालय का निर्माण करना इसका समाधान होगा। यह बच्चों और युवा वयस्कों दोनों को आकर्षित करेगा।

"हमें एक और पुस्तकालय का निर्माण करके पैसा क्यों बर्बाद करना चाहिए?" वे यह जानने के लिए उत्सुक थे।

पुस्तकालय महज़ चार दीवारों और किताबों वाली एक इमारत नहीं है। यह ज्ञान और विद्या की देवी माँ सरस्वती का निवास स्थान है। आप यहाँ सीखते हैं, सृजक बनते हैं और आप वास्तव में इसका आनंद ले सकते हैं। यह युवा रचनाकारों के लिए एक प्रयोगशाला है। यह ज्ञान का घर है, क्योंकि किताबें कभी भी मित्र का अभाव नहीं होने देतीं। हमें अलग-अलग आयु वर्ग के लिए अलग-अलग प्रकार की किताबें रखनी चाहिए। हर किसी की रुचि अलग होती है। सभी अनुभव किसी एक व्यक्ति को उसके जीवनकाल में नहीं मिलते होंगे, लेकिन जब लोग किसी विषय पर पुस्तक पढ़ते हैं तो वे उनकी कल्पना करने में सक्षम बनते हैं।

उदाहरण के लिए मैं माउंट एवरेस्ट पर कभी नहीं चढ़ी हूँ, लेकिन जब मैं किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में किताब पढ़ती हूँ जिसने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की है और उसके बारे में एक पुस्तक लिखी है, तो मैं उनकी इस यात्रा को समझ जाती हूँ और उसे अनुभव करती हूँ, तो ये अपने आप में बहुत बड़ा ज्ञान है। प्रत्येक पुस्तक किसी-न-किसी विषय को साझा करती है। इसलिए पुस्तकालय को ज्ञान का सागर कहा जाता है।

मेरी ये बातें सुनकर वे भी पुस्तकालय के महत्त्व को मान गए।

मैं और बात करना चाहती थी, लेकिन मैंने ऐसा करना टाल दिया, क्योंकि मेरे दिमाग में पहले से ही कोई और योजना चल रही थी।

कुछ ही महीनों में उस गाँव में एक छोटी-सी अच्छी इमारत बन गई, जिसमें उत्तम फ़र्नीचर और एक बड़ा बगीचा था। आरम्भ करने के लिए मैंने सभी पुस्तकों को व्यक्तिगत रूप से चुना था और इसमें कई विषय शामिल थे– साहसिक तथा रचनात्मक गतिविधियाँ, पहेलियाँ और भारतीय इतिहास पर कहानियाँ आदि।

उद्घाटन के दिन मैंने सभी छोटे बच्चों को इकट्ठा किया और प्रत्येक को मिठाई का एक डिब्बा दिया। मैंने कहा, 'आज आप इस मिठाई का आनंद लेंगे और यह जल्द ही ख़त्म हो जाएगी। आप कुछ देर इसका आनंद लेंगे और भूल जाएँगे, लेकिन अगर आप मीठी यादें बनाते हैं, तो वे हमेशा आपके साथ रहेंगी। इसलिए इस जगह का उपयोग उन पलों को बनाने के लिए करें, जिन्हें आप बड़े होने के बाद भी सँजोकर रखेंगे।'

गर्मियाँ शुरू हो रही थीं और बच्चों ने गर्मी से बचने के लिए पुस्तकालय का उपयोग करना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता गया, अधिक बच्चे इन सुविधाओं का उपयोग करने के लिए आकर्षित हुए। लेखन डेस्क, रचनात्मक पठन और अन्य सुविधाएँ सभी का उपयोग किया जा रहा था।

लाइब्रेरी हमेशा बच्चों से भरी रहती थी और गर्मियों के अंत में, मैंने देखा कि नई किताबें पुरानी हो गई थीं, लेखन डेस्क पर अधिक भीड़ थी और गतिविधि पुस्तकों की भारी माँग थी।

मैं मानसून की शुरुआत में फिर वहाँ गई। तब कुछ बच्चे मेरे पास आए और उन्होंने मुझसे कहा, "अम्मा, कृपया पुस्तकालय बंद न करें। यह हमें बहुत पसंद है। स्कूल के बाद हम यहाँ आना चाहते हैं। हमें और किताबें दिलवाएँ। तीन महीनों में हमने बहुत कुछ सीखा है।"

इन युवाओं ने जब मुझे कहानी की ढेर सारी किताबें उपहार में दीं तो मुझे सुखद आश्चर्य हुआ। एक ने कहा, "मैं भी लेखक बनना चाहता हूँ", दूसरे ने कहा, "मैं नौसेना में शामिल होना चाहता हूँ।" कुछ ने यह भी कहा कि वे सैनिक बनना चाहते हैं तो कुछ शिक्षक बनना चाहते हैं। सूची बढ़ती गई और मुझे ख़ुशी हुई कि किताबों ने उन्हें अलग-अलग तरीकों के बारे में सोचने पर मज़बूर कर दिया।

मैंने जवाब में मुस्कुराते हुए मुखिया से पुस्तकालय के महत्त्व को समझने के लिए कहा, "अब हमारे पास डिजिटल मीडिया भी है। हम धीरे-धीरे इससे भी इन बच्चों को परिचित कराएँगे।" आइए, हम उन्हें डिजिटल मीडिया से सीखने के लिए प्रेरित करें, लेकिन निगरानी में।

पढ़ना एक बहुत अच्छी आदत है, बशर्ते हम बुज़ुर्ग पहले पढ़ें। अंततः मैं चाहती हूँ कि माता-पिता भी पुस्तकालय में आएँ और कुछ समय यहाँ पुस्तकें पढ़ें। यह भी बच्चों के लिए एक बेहतरीन मॉडल होगा।

हर समय डिजिटल जानकारी का उपयोग करने से बच्चे प्रभावित हो सकते हैं, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर इसका उपयोग किया जा सकता है।

मैं संतुष्ट होकर गाँव से चली गई।

मैं हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को 'मन की बात' श्रृंखला के लिए लाइब्रेरी और क्रिएटिविटी जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों को चुनने के लिए बधाई देती हूँ। जब वे इसमें बोलते हैं तो पूरा देश सुनता है। पुस्तकालयों के बारे में उनकी यह सलाह हमारे देश के लिए एक बड़ी प्रेरणा होगी।

पढ़ने की अलख जगाते पुस्तकालय

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' के सम्बोधन में रचनात्मकता को बढ़ावा देने में पुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री ने पुस्तकों को 'मानव का सबसे अच्छा मित्र' बताया और पुस्तकालयों को इस मित्रता को पोषित करने वाले स्थान के रूप में वर्णित किया। चेन्नई में प्राकृत अरिवागम जैसे पुस्तकालय बच्चों में पढ़ने के प्रति प्रेम को बढ़ा रहे हैं, वहीं हैदराबाद में फूड 4 थॉट फाउंडेशन और बिहार में प्रयोग लाइब्रेरी जैसी पहल के माध्यम से छात्रों और बच्चों के लिए विभिन्न विषयों पर ज्ञान तक पहुँच सुनिश्चित की जा रही है। इन प्रयासों से शिक्षण को सभी के लिए समावेशी और सुलभ बनाया जा रहा है। दूरदर्शन टीम ने इन पुस्तकालयों के संस्थापकों से बात की।

"प्रयोग पुस्तकालय बच्चों के साहित्य को बढ़ावा देने और पुस्तकालय संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए समर्पित है। दोस्तों के सहयोग से हमने 2013 में इसकी शुरुआत की। हमारा प्राथमिक लक्ष्य बच्चों को विविध और वर्ग-पर आधारित उपयुक्त साहित्य तक पहुँच प्रदान करना, पढ़ने के प्रति रुचि जागृत करना है। स्थानीय स्वशासन के समर्थन से हमने अपने पुस्तकालय नेटवर्क को 24 सरकारी स्कूलों तक सफलतापूर्वक विस्तारित किया है। पुस्तकालय से सम्बंधित शिक्षक बच्चों को शामिल करने, किताबों को आनंद और सीखने का स्रोत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय आज भी अत्यधिक प्रासंगिक बने हुए हैं, क्योंकि किताबें समाज के सच्चे प्रतिबिम्ब के रूप में काम करती हैं और युवा मन को नए भारत की कल्पना करने और उसके निर्माण में योगदान करने के लिए प्रेरित करती हैं।"

-सूर्य प्रकाश राय,
संस्थापक सदस्य, प्रयोग

"प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा हमारी छोटी-सी पहल को ऐसे राष्ट्रीय मंच पर मान्यता देना न केवल एक सम्मान की बात है बल्कि हमारे मिशन की पुष्टि भी है। हमने बच्चों का स्क्रीन टाइम कम करने और पढ़ने की आदत विकसित करने के उद्देश्य से इस लाइब्रेरी की शुरुआत की। हमें आशा है कि अपने पुस्तकालय के माध्यम से हम अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सक्षम होंगे।"

-श्री राम गोपालन
सह-संस्थापक, प्राकृत अरिवागम

"हमारे काम की सराहना करने और 'मन की बात' के माध्यम से भारत के सभी नागरिकों के साथ इस पर चर्चा करने के लिए हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद देते हैं। हमारा मानना है कि इस देश को सिर्फ जीडीपी से नहीं, बल्कि जीजीपी यानी 'ग्राम घर पुस्तकालय' से भी पहचान मिलनी चाहिए। हमने कुछ सरकारी स्कूलों में किताबें उपलब्ध करवाकर इस अभियान की शुरुआत की और आज हम एक लाख से ज्यादा बच्चों तक पहुँचने में सफल रहे हैं।"

के. श्रीनिवास राव
सह-संस्थापक, द फूड 4 थॉट फाउंडेशन

गयाना में भारतीय
186 वर्षों का संघर्ष और सफलता

डॉ. सीता शाह रोथ
शिक्षक, लेखक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानी

गयाना में भारतीयों की स्व-पहचान में, यहाँ तक कि उनकी भाषाओं के खत्म हो जाने के बाद भी पिछले 186 वर्षों में बहुत कम बदलाव आया है। गयाना में बसे भारतीय मूल के लोग वहाँ सबसे बड़े जातीय समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनकी आबादी 40 प्रतिशत होने का अनुमान है। हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि 98 प्रतिशत से अधिक इंडो-गयाना के लोगों ने पहले गयाना निवासी के रूप में अपनी पहचान बनाई है और उनका नाम उनके भारतीय मूल का होने का संकेत देता है। इसके अलावा 96 प्रतिशत से अधिक लोग या तो अधिकांश भारतीय परम्पराओं का पालन करते हैं या प्रमुख हिन्दू तथा मुस्लिम रीति-रिवाज़ों और जीवन शैली को अपनाते हैं।

इंडो-गयाना के इतिहासकार तोता मंगर (2014) ने पूर्वी भारतीय अप्रवासन पर कहा कि कठिनाइयाँ, नुकसान और अवज्ञा, भारतीय गिरमिटिया अप्रवासियों के अनुभवों का हिस्सा थीं, जहाँ कई लोग मुख्य रूप से अपनी ताकत, धीरज, रीति-रिवाज़ों, परम्पराओं और दायित्वों के माध्यम से बने रहे, जिससे मितव्ययिता, वाणिज्य और उनकी उपलब्धियों ने उनमें गर्व की भावना पैदा की। इंडो-गयाना ने अपने नाम, व्यंजन, धर्म, संगीत, अनुष्ठान, त्योहार और प्राकृतिक उपचार - आयुर्वेदिक तथा आध्यात्मिक को बरकरार रखा है। उन्होंने रामलीला जैसे लोक रंगमंच के पहलुओं, संगीत परम्पराओं, लोक नृत्यों और भारतीय फैशन के पहलुओं को भी ज्यादातर बरकरार रखा और पुनर्जीवित किया है।

इतिहासकार जेम्स रोडवे (ब्रिटिश मूल के गयानावासी, 1848-1926) ने चीनी तथा चावल उद्योगों के अस्तित्व और विकास के साथ-साथ गयाना के सांस्कृतिक सम्वर्धन के लिए पूर्व भारतीय प्रवासन के महत्त्व को पहचाना। रोडवे ने कहा कि उनके अनोखे रीति-रिवाज़ों और धर्मों ने आबादी में एक नया और दिलचस्प तत्व जोड़ा। हालाँकि चीनी और चावल की खेती अभी भी नए तरीकों के साथ फल-फूल रहे उद्योग हैं, लेकिन अर्थव्यवस्था और राष्ट्र-निर्माण में इंडो-गयाना का योगदान कृषि से कहीं आगे तक जाता है।

1800 के दशक के अंत से धार्मिक और सांस्कृतिक नींव द्वारा समर्थित शिक्षा और व्यावसायिक कौशल से भारतीय प्रवासियों ने गयाना के समाज के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल की। बुद्धिजीवी, पत्रकार और ब्रिटिश गयाना ईस्ट इंडियन एसोसिएशन के संस्थापकों में से एक जोसफ रूहोमन ने अफ्रीकी दासों की मुक्ति की शताब्दी (1938) पर लिखते हुए, समाज में भारतीय-अफ्रीकी 'गठबंधन' का आह्वान किया। उनके भाई, पत्रकार पीटर रूहोमन ने इसके बाद जल्द ही ब्रिटिश गयाना में भारतीयों के आगमन की शताब्दी पर लिखा। इसमें उन्होंने कहा कि ब्रिटिश गयाना में रहने वाले लोगों ने कॉलोनी को अपना घर बनाने का फैसला किया है, और अपने लिए एक नया समुदाय बनाया है। ब्रिटिश गयाना के पहले चिकित्सकों में से एक डॉ. जंग बहादुर सिंह, O.B.E. (1886-1956), दूसरी पीढ़ी के भारतीय थे जिन्होंने

गयाना हिन्दू धार्मिक सभा द्वारा दिवाली समारोह

गिरमिटिया मजदूरों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी, सात बार ब्रिटिश गयाना ईस्ट इंडियन एसोसिएशन के अध्यक्ष चुने गए और ब्रिटिश गयाना में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की लड़ाई में अग्रणी थे।

ब्रिटेन से आज़ादी की लड़ाई का नेतृत्व डॉ. चेड्डी जगन ने किया था, जो एक गिरमिटिया मजदूर के बेटे थे, जिन्होंने अपने बेटे के लिए बेहतर भविष्य की तलाश में उसे ब्रिटिश गयाना में उस समय की सर्वोच्च शिक्षा संस्था क्वींस कॉलेज में सफल होने के बाद चिकित्सा की पढ़ाई करने के लिए अमरीका भेज दिया था। चेड्डी जगन ने ही अपनी पढ़ाई से लौटने के बाद गयाना की सर्वोच्च शिक्षा संस्था – गयाना विश्वविद्यालय की स्थापना की। डॉ. चेड्डी और जेनेट जगन द्वारा स्थापित राजनीतिक मामलों की समिति (1946) के शुरुआती इतिहास में रूहोमन के अफ्रीकी-भारतीय 'गठबंधन' का एहसास देखा जा सकता है। बाद में (1950 में) ब्रिटिश गयाना लेबर पार्टी के साथ विलय कर पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी का गठन किया गया। इसने जातीय 'गठबंधन' के जोसेफ रूहोमन के सपने को और मजबूत किया,

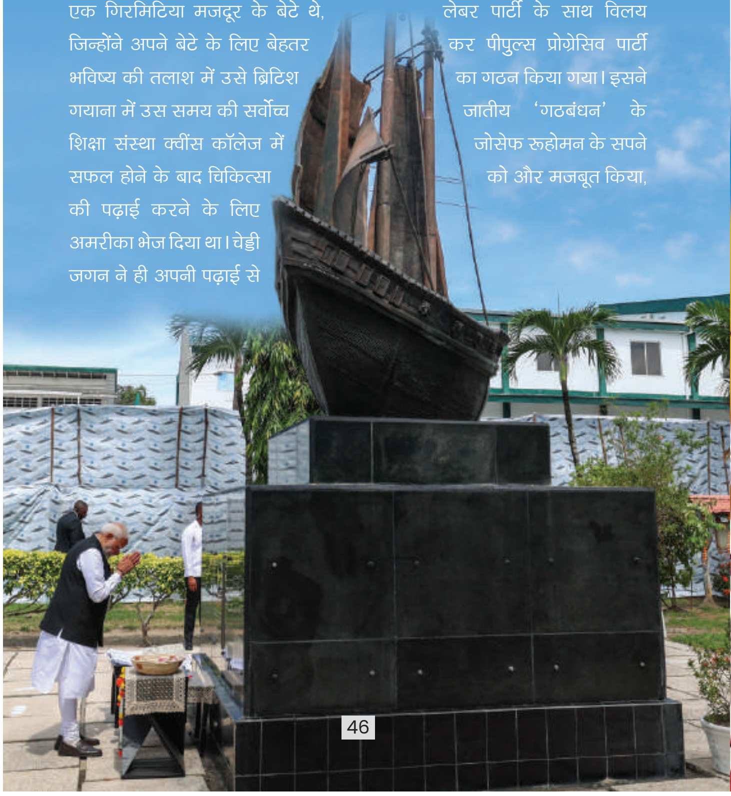

जिससे गतिशील जातीय सम्बंधों वाले समाज का निर्माण हुआ, जो आज भी विकसित हो रहा है।

इंडो-गयाना के क्लेम शिवचरण ने अपनी पीएचडी थीसिस में बताया कि ब्रिटिश गयाना (1838-1917) में आने वाले भारतीय ज्यादातर भारत के समान भौगोलिक क्षेत्रों से आए थे, खासतौर पर संयुक्त प्रांत और बिहार से, जहाँ 83 प्रतिशत से अधिक हिन्दू और 17 प्रतिशत से कम मुसलमान थे। तटीय गयाना के लगभग हर गाँव में मन्दिर तथा मस्जिद मौजूद हैं और फगवा तथा दीवाली के त्योहार पर राष्ट्रीय अवकाश होता है और इन अवसरों पर बड़े आयोजन होते हैं। इन समारोहों में देश भर के सभी जातीय समूहों की भागीदारी होती है। स्कूलों में रंगोली प्रदर्शनी तथा प्रतियोगिताएँ, प्रदर्शन कला मंच शो, और इंडो-गयाना के गीत तथा नृत्य प्रतियोगिताएँ उन कई तरीकों में से हैं, जिनसे भारतीय उपस्थिति समकालीन गयाना समाज में व्याप्त है।

भारत में मौखिक इतिहास परियोजनाएँ

स्मृतियों, ध्वनियों और पहचानों का संरक्षण

"साथियो ऐसा ही एक 'Oral History Project' भारत में भी हो रहा है। इस project के तहत इतिहास प्रेमी देश के विभाजन के कालखंड में पीड़ितों के अनुभवों का संग्रह कर रहे हैं। अब देश में ऐसे लोगों की संख्या कम ही बची है, जिन्होंने विभाजन की विभीषिका को देखा है। ऐसे में यह प्रयास और ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

साक्षात्कार के माध्यम से लोगों के व्यक्तिगत आख्यानों, स्मृतियों और अनुभवों को संग्रहीत करना, उन्हें रिकॉर्ड करना और संरक्षित करना हमारे देश के मौखिक इतिहास से जुड़ी परम्परा है। लिखित ऐतिहासिक विवरण अक्सर किसी घटना के राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वहीं दूसरी ओर मौखिक इतिहास उन लोगों को आवाज़ देता है, जिनकी व्यक्तिगत कहानियों और अनुभवों को अनदेखा किया जाता है या हाशिए पर रखा जाता है।

ऐतिहासिक शोध के लिए लिखित रिकॉर्ड आवश्यक हैं, किंतु मौखिक इतिहास व्यक्तिगत कहानियों, भावनाओं और अनुभवों पर जोर देकर अतीत के अधिक समग्र दृष्टिकोण तक पहुँच प्रदान करता है। इन सामग्रियों को आधिकारिक दस्तावेजों या अभिलेखागार तक सीमित नहीं किया जा सकता है। ये व्यक्तिगत विवरण अक्सर इतिहास का अधिक गहन और सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। मौखिक इतिहास विभिन्न पीढ़ियों के लोगों को अपनी स्मृतियों को साझा करने, अतीत को वर्तमान से जोड़ने और सामूहिक स्मृति की गहरी समझ पैदा करने की सुविधा प्रदान करता है।

भारत में पिछले कुछ वर्षों में, मौखिक इतिहास से सम्बंधित अनेक महत्त्वपूर्ण पहलें की गई हैं। शैक्षणिक संस्थानों और ज़मीनी स्तर के संगठनों द्वारा इस प्रकार की पहलों पर काम किया जाता है। कुछ प्रमुख परियोजनाओं में शामिल हैं :

प्रधानमंत्री मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय (पीएमएमएल) की परियोजना

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री मेमोरियल और पुस्तकालय (पीएमएमएल) देश में मौखिक इतिहास से सम्बंधित पहल में एक प्रमुख योगदानकर्ता रहा है। इस पुस्तकालय की मौखिक इतिहास परियोजना 1970 के दशक में शुरू हुई। मुख्य रूप से यहाँ भारत के स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के बाद की अवधि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले लोगों की स्मृतियों को संरक्षित किया गया है। देश के आधुनिक इतिहास को आकार देने वाले प्रमुख राजनीतिक नेताओं, नौकरशाहों और बुद्धिजीवियों के साक्षात्कार इस परियोजना में शामिल हैं। साक्षात्कार में भारत का विभाजन, एक सम्प्रभु भारतीय राज्य का निर्माण और लोकतांत्रिक संस्थानों के विकास जैसे विविध विषयों को शामिल किया गया है।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (एनएआई) मौखिक इतिहास परियोजना

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (एनएआई) ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम, सांस्कृतिक विरासत और प्रवासी भारतीय लोगों के अनुभवों की अमूल्य गाथाओं को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने के लिए समर्पित एक मौखिक इतिहास परियोजना शुरू की है। इस पहल में उन व्यक्तियों से प्रत्यक्ष विवरण एकत्र करना शामिल है, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को देखा है या उनमें भाग लिया है। इस क्रम में यह सुनिश्चित किया जाता है कि उनके व्यक्तिगत आख्यान शोध और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए प्रलेखित और सुलभ हैं।

एनएआई का लक्ष्य इस परियोजना के माध्यम से विविध दृष्टिकोणों को शामिल करके देश के ऐतिहासिक रिकॉर्ड को समृद्ध करना और भारत के अतीत की अधिक व्यापक समझ प्रदान करना है। मौखिक इतिहास परियोजना यानी ओरल हिस्ट्री प्रोजेक्ट देश की दस्तावेजी विरासत की सुरक्षा के लिए एनएआई के व्यापक मिशन का हिस्सा

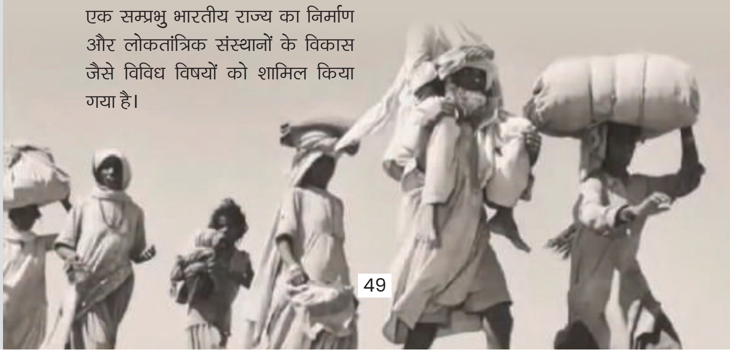

है। इसमें आसान पहुँच और संरक्षण की सुविधा के लिए अभिलेखीय दस्तावेजों के लाखों पृष्ठों का डिजिटलीकरण शामिल है। एनएआई इन मौखिक इतिहासों को संरक्षित करके यह सुनिश्चित करता है कि भारत के समृद्ध इतिहास में योगदान देने वाले व्यक्तियों की आवाज़ और अनुभव कहीं खो न जाएँ, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए मूल्यवान संसाधनों के रूप में उनका अस्तित्व बना रहे।

मौखिक इतिहास उन परम्पराओं, भाषाओं और प्रणालियों की भी रक्षा करता है, जो आधुनिक युग में क्षरण का सामना कर रही हैं। उदाहरण के लिए, दास्तांगोई या पटचित्र जैसी कथावाचन परम्पराओं का दस्तावेजीकरण करने के प्रयास निश्चित तौर पर क्षेत्रीय कला और दर्शन को समझने में मौखिक आख्यानों के महत्त्व पर जोर दे रहे हैं।

भारत की प्राचीन समुद्री शक्ति के साक्ष्यों को संरक्षित करने के लिए देश में एक और अभियान भी चल रहा है। इसी प्रयास के तहत लोथल में एक बड़ा संग्रहालय बनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में भारत के समुद्री इतिहास में लोथल के महत्त्व पर ज़ोर दिया। लोथल को विश्व के सबसे पहले डॉकयार्ड के रूप में जाना जाता है। पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय लोथल

में अब एक राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (एनएमएचसी) का निर्माण करने में जुटा है। यह भव्य और समर्पित संग्रहालय भारत के 5000 साल पुराने समुद्री इतिहास को प्रदर्शित करेगा, जो हड़प्पा सभ्यता से शुरू हुआ था।

प्राचीन शहर लोथल एक हलचल भरे व्यापारिक बंदरगाह के रूप में ई.पू. 2400 में सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान विकसित हुआ। पुरातत्वविदों का मानना है कि एक प्रमुख नदी प्रणाली के साथ जुड़े होने के कारण लोथल सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था। यह नदी प्रणाली सिंध को गुजरात में सौराष्ट्र से जोड़ने वाले पुराने व्यापारिक रूट का एक हिस्सा थी। इस स्थल खुदाई से अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ मिली हैं, जो इसे आधुनिक भारत की सबसे समृद्ध पुरातात्विक खोजों में से एक बनाती हैं। यह गौरवशाली स्थल एक परिवर्तनकारी यात्रा के लिए तैयार है। मार्च, 2019 में एनएमएचसी की आधारशिला रखी गई, जो दुनिया के सबसे बड़े समुद्री परिसरों में शुमार है।

मौखिक इतिहास और संरक्षण परियोजनाएँ ऐतिहासिक घटनाओं को मानवीय बनाती हैं, व्यक्तिगत अनुभवों को सामने लाकर सहानुभूति को बढ़ावा देती हैं। वे इतिहास की एकछत्र प्रस्तुतियों को चुनौती देती हैं और विविध परिदृश्य के साथ विद्वत् परिचर्चाओं को समृद्ध करती हैं। इतना ही नहीं, ये परियोजनाएँ लिखित अभिलेखों से वंचित की आवाज़ों को संग्रहीत करके मौखिक इतिहास के निर्माण का लोकतंत्रीकरण भी करती हैं।

लुप्त होती गौरैया और शहरीकरण

"मेरे प्यारे देशवासियो, आप सभी लोगों ने बचपन में गौरेया या Sparrow को अपने घर की छत पर, पेड़ों पर चहकते हुए ज़रूर देखा होगा। हर भाषा, संस्कृति में गौरेया को लेकर किस्से-कहानी सुनाए जाते हैं। हमारे आसपास Biodiversity को बनाए रखने में गौरेया का एक बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन आज शहरों में बड़ी मुश्किल से गौरेया दिखती है। बढ़ते शहरीकरण की वजह से गौरेया हमसे दूर चली गई है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

एक अंतहीन नृत्य का प्रदर्शन करते दिल्ली के हलचल भरे ट्रैफिक जाम के बीच– हमारी प्यारी 'गौरैया' की चहक एक अंतरंग, आरामदायक वातावरण प्रदान करती रही है। यह उसकी हल्की-फुल्की चहचहाहट ही थी, जो सुबह की हवा, शहर की सड़कों और पुरानी दिल्ली के प्राचीन स्मारकों में गूँजती रही है, लेकिन जैसे-जैसे साल बीतते गए, यह सुरीली धुन शांत होती जा रही है।

एक समय था, जब सुबह से शाम तक शहर की सड़कों पर गौरैया को उड़ते हुए देखा जाता था और उनकी चहचहाहट की आवाज़ पूरे माहौल में गूँजती थी। पुरानी दिल्ली की पारम्परिक हवेलियों में रहने वाले परिवारों के आँगन में अक्सर गौरैया का घोंसला होता था। उनकी चहक, चाय की सुगंध और व्यस्त बाज़ारों की आवाज़ के साथ मिलकर वातावरण को जीवंत बनाती थी। परिवर्तनशीलता की प्रतीक गौरैया शहरी जीवन की जटिलताओं को सुकून में बदलने वाली एक छोटी-सी प्राणी थी।

गौरैया, विशेष रूप से घरेलू गौरैया (पासर डोमेस्टिकस) एक साहसी पक्षी है, जिसने सदियों से उल्लेखनीय रूप से शहरी वातावरण का अच्छी तरह से अनुकूलन किया है। ये छोटे पक्षी एक समय दुनिया भर के शहरों में पनपते थे, इमारतों के कोनों में घोंसला बनाते थे, बचे हुए भोजन की तलाश करते थे और अपनी विशिष्ट आवाज़ों से शहर के दृश्यों को जीवंत बनाते थे। हालाँकि जैसे-जैसे शहर बढ़े और बदले हैं, वैसे-वैसे परिस्थितियाँ भी बदली हैं।

भारत में गौरैया, जिन्हें तमिल में कुरुवी और तेलुगु में पिच्चुका जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है, लम्बे समय से सांस्कृतिक कहानियों और दैनिक जीवन का एक पोषित हिस्सा रही हैं। हालाँकि शहरीकरण के कारण ये पक्षी शहरों में तेज़ी से लुप्त होने के कगार पर आ गए हैं। आजकल कई बच्चे इन्हें केवल तस्वीरों या वीडियो में ही देखते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' एपिसोड में इस मुद्दे पर प्रकाश डाला और गौरैया को हमारे जीवन में वापस लाने के प्रयासों के महत्त्व पर ज़ोर दिया।

शहरी क्षेत्रों में गौरैया की आबादी में गिरावट के कई कारण हैं। प्राथमिक कारणों में से एक, उपलब्ध प्राकृतिक आवासों में कमी है। जैसे-जैसे शहरों का विस्तार होता है, वे अक्सर हरियाली के छोटे-छोटे हिस्सों को निगल जाते हैं, जो कभी पक्षियों के लिए भोजन और आश्रय का महत्त्वपूर्ण स्रोत थे। पार्क और उद्यान, जो कभी पौधों और कीड़ों से भरे रहते थे, दुर्लभ हो गए हैं, उनकी जगह कंक्रीट, डामर और मैनीक्योर किए गए लॉन ने ले ली है, जो वन्यजीवों को सहारा देने में बहुत कम योगदान देते हैं।

कई भारतीय शहरों की तरह दिल्ली का भी पिछले कुछ दशकों में तेज़ी से विकास हुआ है। एक समय पुरानी, औपनिवेशिक युग की इमारतों और पेड़ों की छाया वाले आँगन से सजी, उलझी हुई गलियों ने अब विशाल अपार्टमेंट परिसरों और शॉपिंग मॉल का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। शहर का परिदृश्य, जो कभी हरे-भरे स्थानों और बरगद के प्राचीन

पेड़ों से भरा हुआ था, जो अनगिनत पक्षियों का भरण-पोषण करते थे, तेज़ी से कंक्रीट, स्टील और काँच से प्रतिस्थापित किए जा रहे हैं। छोटे बगीचे, घर के पिछले हिस्से और छत की जगह गौरैया का निवास स्थान हुआ करती हैं, मगर शहरी फैलाव में ये जगहें भी लुप्त होकर रह गई हैं।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक खाद्य स्रोतों में बदलाव है। गौरैया बीज, कीड़े और मानव भोजन के अवशेषों पर पलती हैं। हालाँकि आधुनिक शहर ने अपनी खाद्य आपूर्ति में नाटकीय रूप से बदलाव किया है। शहरी भूदृश्य में उपयोग किए जाने वाले कीटनाशक और रासायनिक उर्वरक कीड़ों की उपलब्धता को सीमित करते हैं, जो युवा पक्षियों के लिए प्राथमिक भोजन स्रोत हैं। इसके अलावा इन दिनों स्थानीय बाज़ार में पहले से पैक किए गए, जो प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ हैं, वे वही पोषण मूल्य प्रदान नहीं करते हैं, जो प्राकृतिक खाद्य स्रोत (अनाज) करते थे।

इसके अलावा तेज़ी से हो रहा शहरीकरण भी गौरैया की संवाद करने की क्षमता को प्रभावित करता है।

गौरैया और कई अन्य पक्षी संयोग, क्षेत्र की रक्षा और सामाजिक सम्पर्क के लिए अपने गीतों पर भरोसा करते हैं। हालाँकि शहरी जीवन का ध्वनि प्रदूषण, जो यातायात, निर्माण और औद्योगिक गतिविधियों से उत्पन्न होता है, एक-दूसरे को सुनने की उनकी क्षमता में रुकावट डालता है। अध्ययनों से पता चला है कि शोर के बावजूद गौरैया ऊँचे स्वर में गाने के लिए मज़बूर होती है, जिससे उसे तनाव हो सकता है और संयोग व्यवहार बाधित हो सकता है।

इन चुनौतियों के जवाब में शहरी क्षेत्रों में गौरैया की आबादी में गिरावट को बचाने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं। 'पक्षी-अनुकूल' शहरी नियोजन जैसी समुदाय-संचालित पहलों में गति आई है। इनमें छत पर बगीचे बनाना, देसी पेड़ तथा झाड़ियाँ लगाना और कीटनाशकों का उपयोग कम करना शामिल है। सार्वजनिक पार्कों में पक्षियों के लिए फीडर जोड़ने या 'जंगली कोने' बनाने जैसे सरल क़दम भी महत्त्वपूर्ण अंतर ला सकते हैं।

गौरैया एक बार फिर शहर को अपने गीतों से भर दे, इसके लिए शहरी निवासियों को मज़बूत इरादे और संवेदना के साथ काम करना होगा। जैव विविधता को प्राथमिकता देने वाले वातावरण को प्रोत्साहन देकर, हरित स्थान बनाकर और पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देकर हम उस सद्भाव को फिर से जगा सकते हैं, जो पहले कभी शहर के परिदृश्य में पनपा था। चुनौती सिर्फ गौरैया को वापस लाने की नहीं है, बल्कि सभी जीवों के अंतर्सम्बंध को पहचानने और एक ऐसे भविष्य का पोषण करने की है, जहाँ शहर प्रकृति के साथ उतने ही जीवंत हों, जितने लोगों के साथ होते हैं। ऐसे प्रयासों से यह शहर वास्तव में अपनी सम्पूर्ण गरिमा के साथ गौरैया की चहचहा से गुंजयामान होगा।

गौरैया से लौटती प्रकृति की मुस्कान

"आप सभी लोगों ने बचपन में गौरैया को अपने छत पर, पेड़ों पर चहकते हुए जरूर-जरूर देखा होगा। गौरैया को तमिल और मलयालम में कुरुवी, तेलुगु में पिचुका और कन्नड़ में गुब्बी के नाम से जाना जाता है। हर भाषा, संस्कृति में गौरैया को लेकर किस्से-कहानी सुनाए जाते हैं। हमारे आस-पास जैव-विविधता को बनाए रखने में गौरैया का एक बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन आज शहरों में बड़ी मुश्किल से गौरैया दिखती है। बढ़ते शहरीकरण की वजह से गौरैया हमसे दूर चली गई है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, 'मन की बात' सम्बोधन में

भारत के दिल में गौरैया आकाश में उड़ने वाली छोटी-छोटी चिड़ियों से कहीं अधिक महत्त्व रखती है। वे घर, समुदाय और सामाजिक जीवन की प्रतीक हैं, जो देश के सांस्कृतिक ताने-बाने में बुनी हुई हैं। गौरैया की आबादी में गिरावट केवल एक क्षणिक जिज्ञासा नहीं है। यह एक गम्भीर मुद्दा है, जो गहन पर्यावरणीय बदलाव और बढ़ते शहरीकरण की चुनौतियों का संकेत देता है। इस प्रकार, गौरैया को पुरानी यादों के तौर पर सँजोने से कहीं अधिक इसके निरंतर संरक्षण के प्रयासों की आवश्यकता है।

"जब मैं छात्र था, उस समय से हम गौरैया संरक्षण के लिए 2014 से काम कर रहे हैं। मैंने अपने प्रोफेसर डॉ. टी. मुरुगन के साथ काम करना शुरू किया। 2014 में हमने अपने कॉलेज में छात्रों की मदद से एक सर्वेक्षण किया। हमने उत्तरी चेन्नई के आवासीय क्षेत्र का दौरा किया और आम लोगों से चर्चा की। उस समय वहाँ गौरैया मौजूद थीं। एक बार इसकी पुष्टि हो जाने के बाद हमने घोंसले उपलब्ध कराना शुरू कर दिया। आम लोग इस काम में बड़ी मुश्किल से रुचि दिखा रहे थे, इसलिए हमने स्कूली बच्चों की मदद ली। उत्तरी चेन्नई, रायपुरम में धनलक्ष्मी असेम्बली स्कूल पहला स्कूल था, जहाँ हमने केवल 15 नेस्ट बॉक्स के साथ इस परियोजना की शुरुआत की। अब तक हमने पूरे तमिलनाडु, पुदुचेरी, केरल और कर्नाटक में लगभग 10,000 नेस्ट बॉक्स वितरित किए हैं। उत्तरी चेन्नई में ही हमने 40 स्कूलों में 8,000 घोंसले वितरित किए हैं।"

-गणेशन और किशोर, कुडुगल ट्रस्ट, चेन्नई

"अर्ली बर्ड 10 साल पुरानी पहल है। इन दस वर्षों में हमने 10 से अधिक भारतीय भाषाओं में प्रकृति शिक्षा सामग्री तैयार की है। हमने देश भर में शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है। हम बच्चों के साथ सीधे सम्पर्क में भी रहते हैं। अर्ली बर्ड में, हम यह मानकर चलते हैं कि बच्चों में प्रकृति के बारे में एक सहज जिज्ञासा होती है और हम इसे पोषित करना चाहते हैं और इस जिज्ञासा को बढ़ाने और उनके आस-पास की प्राकृतिक दुनिया से जुड़ने में उनकी मदद करना चाहते हैं।

-गरिमा भाटिया,
नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन, मैसूरु, कर्नाटक की पहल 'अर्ली बर्ड' की टीम लीडर

"हम प्राकृतिक शिक्षा को ग्राम पंचायत पुस्तकालयों तक ले जाने के लिए कर्नाटक पंचायत आयुक्तालय के साथ सहयोग कर रहे हैं। शुरुआती पल के तौर पर हमने 500 पुस्तकालयों के साथ काम किया। इन 500 पुस्तकालयों को हमने 'नेचर एजुकेशन किट' देकर उन्हें स्थापित किया। इन पुस्तकालयों के प्रभारी सभी 500 पुस्तकालयाध्यक्षों को हमारे द्वारा उन्हें प्रदान की गई सामग्रियों का इस्तेमाल करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

-अभिषेका, नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन, मैसूरु, कर्नाटक की पहल 'अर्ली बर्ड' की प्रोग्राम मैनेजर

मिट्टी से मोहब्बत!

प्रकृति को संवारने वाले नायक

मन की बात के में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उन लोगों और समूहों की प्रेरक कहानियों को पेश किया, जो देश और समाज में बेमिसाल बदलाव लाने का जज्बा रखते हैं। चाहे वह 'स्वच्छ भारत अभियान' हो या 'एक पेड़ मां के नाम' मुहिम हो, जिसने पूरे देश को एकजुट किया और विदेशों तक प्रेरणा पहुँचाई, या फिर बेकार समझे जाने वाले कचरे को काम का सामान बनाने की इनोवेटिव कोशिशें –

ये कहानियाँ भारतीय समाज की ताक़त और हौसले को दिखाती हैं। मुम्बई की अक्षरा और प्रकृति का कपड़े के छोटे टुकड़ों से फैशन आइटम बनाना, कानपुर प्लॉगर्स का गंगा की सफाई और कचरे को रीसाइकिल करना, बिहार की महिलाओं का बड़े पैमाने पर पेड़ लगाना और असम की इतिशा का स्थानीय लोगों के साथ मिलकर अरुणाचल की सांगती घाटी को साफ बनाने का प्रयास – हर पहल न सिर्फ़ पर्यावरण को बेहतर बना रही है, बल्कि दूसरों के लिए मिसाल भी पेश कर रही है। मन की बात में प्रधानमंत्री द्वारा इन नायकों का ज़िक्र, एक विकसित भारत तथा समावेशी और सतत समाज के निर्माण में उनके योगदान को रेखांकित करता है।

"सुबह 11:00 बजे हमें पता लगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हमारे ग्रुप को अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में उल्लेख किया है। ये एक सपना पूरा होने जैसा था क्योंकि प्रधानमंत्री मोदीजी के ट्वीट को देख करके ही हमने ये ग्रुप स्टार्ट किया था। प्लॉगिंग वर्ड क्या होता है? ये भी मुझे उनके ट्वीट के थ्रू ही पता लगा था। एक इतना बड़ा इंसान, जो प्रधानमंत्री है इस देश का, जब वो झुक करके कचरा उठा सकता है तो हम क्यों नहीं कर सकते?

कानपुर प्लॉगर्स के साथ हमारा सपना है कि हम कानपुर को उत्तर प्रदेश का इंदौर बनाएँ। पूरा इंडिया ऐसा हो सकता है, जो कि अपने कूड़े का निस्तारण करे। हम तो यही विज़न रखते हैं कि पूरा इंडिया, पूरी तरह से स्वच्छ हो, सबको वेस्ट मनेजमेंट पता हो, सस्टेनेबल हैबिट्स पता हों। यही हमारा सपना है।"

-संजीवनी शर्मा, कानपुर प्लॉगर्स ग्रुप की संस्थापक

निशा कुमारी, रीना देवी और सुनीता देवी, स्वयं सहायता समूह 'जीविका' से जुड़ी हुई हैं। इनका कहना है "हमें जीविका की ओर से आम, कटहल ,लीची, जामुन एवं कई और फलदार पेड़ हज़ारों की संख्या में मिले हैं। ये पेड़ लगाए जा चुके हैं। इसका फायदा यह है कि हम स्वयं तो ये फल खाएँगे ही, हमारे समाज के बच्चे भी खाएँगे, साथ ही ये पेड़ हमें धूप और गर्मी से भी बचाएँगे।"

"अभी तक जीविका के द्वारा 6 लाख 87 हजार 500 फलदार वृक्ष दिए गए हैं जिनका वृक्षारोपण भी हो चुका है। अभी तक 15 'दीदी की नर्सरी' चल रही है। हरेक प्रखंड में तीन क्लस्टर हैं। आगे हम लोगों का प्लान है कि प्रत्येक क्लस्टर में एक 'दीदी की नर्सरी' हो। दीदियों को इससे काफी फायदा हो रहा है। फल के साथ-साथ वातावरण भी शुद्ध हो रहा है।"

-राजेश कुमार रंजन,
'जीविका' के पदाधिकारी

"प्रधानमंत्री जी द्वारा पहचान मिलना हमारे लिए एक बड़ा सम्मान है। यह हमारी टीम और सांगती समुदाय की मेहनत का प्रमाण है। यह सराहना हमें और बेहतर काम करने के लिए प्रेरित करती है कि हम व्यवस्था को और सुधार सकें और अन्य समुदायों तक पहुँचकर अपने अनुभव साझा कर सकें और अपने प्रयासों को दोहरा सकें।

हम लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए गाँव के बच्चों के साथ मिलकर रचनात्मक और विचारोत्तेजक सांकेतिक आकृतियाँ और दीवारों पर कला बनाते हैं। हम यात्रा कम्पनियों के सहयोग से गाँव में जागरूकता सत्र आयोजित करते हैं, जहाँ स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ और बच्चे पर्यटकों को सांगती के सामुदायिक कचरा प्रबंधन प्रणाली के बारे में बताते हैं।

हमारा काम सांगती घाटी के प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने में योगदान दे रहा है, जहाँ पर्यटन से बढ़ते कचरे की समस्या का समाधान किया जा रहा है। आज, समुदाय के प्रयासों की बदौलत कचरे को फेंकना और जलाना बंद कर दिया गया है। अब कचरा सही तरीके से प्रबंधित किया जा रहा है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए घाटी के प्राकृतिक सौन्दर्य को संरक्षित करने में मदद मिल रही है।"

-असम की इतिशा, सांगती घाटी की स्वच्छता अभियान की प्रमुख, अरुणाचल प्रदेश

मन
की
बात
प्रतिक्रियाएँ

MANN KI BAAT

मन की बात
इतिहास प्रेमी देश के विभाजन के कालखंड में पीड़ितों के अनुभवों का संग्रह कर रहे हैं

MANN KI BAAT

Slovak
मुझे Slovakia में हो रहे ऐसे ही एक और प्रयास के बारे में पता चला है जो हमारी संस्कृति को संरक्षित करने और उसे आगे बढ़ाने से जुड़ा है। यहां पहली बार Slovak language में हमारे उपनिषदों का अनुवाद किया गया है। इन प्रयासों से भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रभाव का भी पता चलता है। हम सभी के लिए ये गर्व की बात है कि दुनिया-भर में ऐसे करोड़ों लोग हैं, जिनके हृदय में, भारत बसता है।

मन की बात

100 करोड़ पेड़ लगाने का अहम पड़ाव पार कर लिया है।

मन की बात
लखनऊ के वीरेंद्र, भोपाल के महेश और अहमदाबाद के राजीव की अनोखी सेवा

Prof Rakesh Sinha

Sarbananda Sonowal

The National Maritime Heritage Complex (NMHC) at Lothal in Gujarat will be a museum of Bharat's maritime heritage and how it has shaped world history.

Gratitude to Hon'ble PM Shri @narendramodi ji for highlighting this important initiative of protecting our legacy in #MannKiBaat.

Pushkar Singh Dhami

Vinod Tawde

आज NCC दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री @narendramodi जी ने NCC Cadet के तौर पर अपना अनुभव साझा किया...

#MannKiBaat

RJ Raunac

This is really amazing 🔥 India ka apna Waves OTT , download now bolo it wow 😊

WAVES OTT @WAVESOTT · Nov 24

'Mann Ki Baat' with Prime Minister Narendra Modi Live at 11 AM IST, on WAVES OTT.

Download the WAVES app now to tune in!

Show more

एकजुट युवाओं के मंथन-चिंतन से पूरा होगा विकसित भारत का सपना : मोदी

मन की बात : प्रधानमंत्री ने कहा-विकसित भारत यंग लीडर डायलॉग भावी पीढ़ी के लिए बड़ा मौका

एक लाख युवाओं को लाएंगे राजनीति में

निस्वार्थ सेवा में जुटे युवाओं को साधा

116वें एपिसोड में पीएम मोदी के "मन की बात"

बायोडायवर्सिटी बनाये रखने में गौरैया का महत्वपूर्ण योगदान

વડાપ્રધાન મોદીએ દેશના યુવાનોને એનસીસીમાં જોડાવા માટે અપીલ કરી

116TH MANN KI BAAT EPISODE

Young Leaders Dialogue on Jan 11 to connect them with politics: PM

युवा सोच से ही देश की तरक्की संभव: मोदी

मन की बात

अगले साल तक 1 लाख नए युवाओं को राजनीति में लाने का लक्ष्य

पीएम मोदी ने मन की बात में किया यूथ पर फोकस

विकसित भारत युवा नेता संवाद का किया जिक्र

बुजुर्गों को डिजिटल अरेस्ट से बचाने के लिए आगे आ रहे युवा

विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका अहम

"When youth brainstorm on taking country forward, we definitely get concrete results": PM Modi in Mann ki Baat

എൻ.സി.സി ദിനങ്ങൾ ഓർമ്മിച്ച് മോദി മൻ കി ബാത്തിൽ

મોદીએ મન કી બાત કાર્યક્રમમાં સંબોધન કર્યું

વૃક્ષ માતાના નામે અભિયાનમાં પાંચ મહિનામાં ૧૦૦ કરોડ વૃક્ષો વાવવાનો માઈલસ્ટોન પાર કર્યો

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ମନ କି ବାତ

ଏନସିସିରେ ଯୋଗଦେବାକୁ ଯୁବବର୍ଗଙ୍କୁ କଲେ ନିବେଦନ

بچے لائبریریوں میں شامل ہوں اور نئی ٹیکنالوجی سیکھیں: مودی

بچے لائبریریوں سے جڑیں
نئی ٹیکنالوجی سیکھیں، وراثت بچائیں: مودی

PM Modi announces 'Young Leaders Dialogue' in Jan

Conservation of sparrow: Modi calls for collective responsibility

मन की बात
भारतीय मूल के लोग दुनिया में हर क्षेत्र में आगे...

মন-কি-বাত অনুষ্ঠানের ১১৬তম পর্বে মোদী
এনসিসি তরুণদের মধ্যে শৃঙ্খলা, নেতৃত্ব ও সেবার মনোভাব জাগিয়ে তোলে

abp न्यूज़

Man Ki Baat: 'अगले साल तक 1 लाख नए युवाओं को राजनीति में लाने का लक्ष्य', PM मोदी ने मन की बात में किया यूथ पर फोकस

आज तक

PM Modi ने 'Mann Ki Baat' कार्यक्रम में Digital Arrest को लेकर जनता को आगाह किया

दैनिक भास्कर

पीएम मोदी ने की भोपाल के युवक की तारीफ: 'मन की बात' में बोले- महेश ने बुजुर्गों को डिजिटल पेमेंट सिखाया

ETV भारत

FINANCIAL EXPRESS

Mann Ki Baat: PM Modi lauds libraries as hubs of creativity, highlights efforts to inspire children's love for books

Hindustan Times

On Mann ki Baat, PM Narendra Modi advocates for sparrow conservation

हिन्दुस्तान

युवा सोच से ही देश की तरक्की संभव: नरेंद्र मोदी

The Indian EXPRESS

Young Leaders Dialogue on Jan 11 to connect them with politics: PM Modi

जनसत्ता

Mann Ki Baat: 116 वें संस्करण में 'एक पेड़ मां के नाम', NCC, गौरेया, स्वामी विवेकानंद, गयाना यात्रा सहित कई मुद्दों पर बोले प्रधानमंत्री मोदी

Outlook

'जब युवा देश को आगे ले जाने पर मंथन करते हैं, तो हमें ठोस परिणाम मिलते हैं: मन की बात में पीएम मोदी

ପ୍ରଗତିବାଦୀ PRAGATIVADI

PM Modi Warns Against "Digital Arrest" Scams in 116th Episode of 'Mann Ki Baat'

Prokerala

NCC instils discipline, leadership, service in youth: PM Modi

THE ECONOMIC TIMES

A Mini India exists in Guyana, says PM Modi in 'Mann Ki Baat'

ThePrint

Ploggers group in Kanpur get PM Modi's praise in 'Mann Ki Baat' address

TIMES NOW

PM Modi Praises Chennai's Prakrit Arivagam In 'Mann Ki Baat': A Library Inspiring Young Minds

THE TIMES OF INDIA

PM lauds Assam woman for transforming Arunachal's Sangti Valley into a waste-free zone

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

ALL INDIA RADIO NEWS

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार